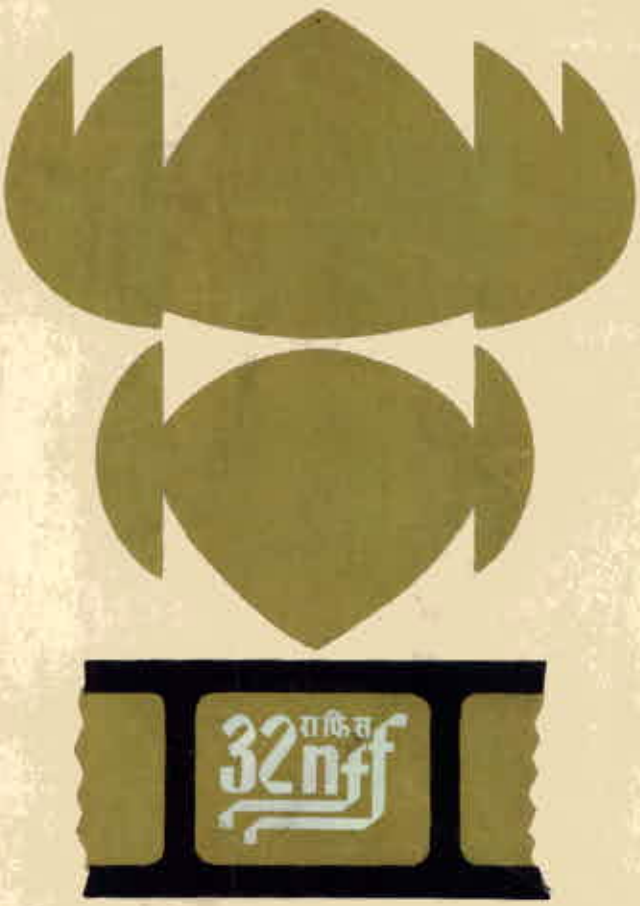

32 वाँ राष्ट्रीय फिल्म समारोह
1985

32nd National Film Festival
1985

32 वां राष्ट्रीय
फिल्म समारोह
जून 1985

फिल्म समारोह निदेशालय, राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम लिमिटेड द्वारा संकलित एवं संपादित।

एलाइड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड नई दिल्ली-110064 में मुद्रित।

कथाचित्र निर्णायक मंडल

भूपेन हज़ारिका (अध्यक्ष)
शर्मिला टैगोर
टी०वी कुन्हि कृष्णन्
अजय कुमार डे
मनमोहन तल्ख़
भारती राजा
ऊषा भगत
गिरीश कासरवल्लि
भीम सैन
जी० हनुमन्त राव

ग़ैर कथाचित्र के लिए निर्णायक मंडल

एन० वी० के० मूर्ति (अध्यक्ष)
शान्ता सरबजीत सिंह
आशीष मुखर्जी
जे० पी० दास

सिनेमा पर सर्वोत्तम लेखन निर्णायक मंडल

विक्रम सिंह (अध्यक्ष)
मोहम्मद शमीम
जगमोहन

1984 के लिए दादा साहेब फाल्के पुरस्कार

सत्यजीत राय

स्वर्ण कमल और 1,00,000 रुपये का नकद पुरस्कार तथा एक शाल

सत्यजीत राय विश्व के उन गिने-चुने फिल्म निर्देशकों में से हैं जो अपने जीवन काल में ही किंवदंतियों के विषय बन गए। कलकत्ता के प्रेज़िडेंसी कॉलेज में पढ़ाई पूरी करने के बाद उन्होंने शांतिनिकेतन में ललित कला का पाठ्यक्रम पूरा किया। इसके बाद उन्होंने एक विज्ञापन एजेंसी में काम किया। लगभग 30 वर्ष की उम्र में उन्होंने अपनी पहली फिल्म "पाथेर पांचाली" का निर्माण किया जिसे 1956 में कान फिल्म समारोह में वर्ष का "सर्वोत्तम आलेख" कहकर सराहा गया। इसके बाद उनकी ख्याति लगातार बढ़ती गई। अब तक वे 32 फिल्में बना चुके हैं, जिनमें पांच वृत्तचित्र और टेलीविजन के लिए दो लघुचित्र हैं। इनमें से लगभग सभी फिल्मों को अनेक राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय पुरस्कार मिले हैं। विश्व भर में फिल्म प्रेमी सत्यजीत राय को मुट्ठीभर महानतम् फिल्म निर्देशकों में से एक मानते हैं।

"पाथेर पांचाली", "अपराजितो" और "अपूर संसार" नाम की तीन श्रंखलाबद्ध फिल्मों के अलावा उनकी कुछ उल्लेखनीय फिल्में हैं– 'जलसाघर', 'महानगर', 'चारूलता', 'नायक', 'गूपी गायने बाघा बायन', 'अरण्येर दिनरात्रि', 'प्रतिद्वंदी', 'सीमाबद्ध', 'आशानिसकेत', 'सोनार केला', 'जन अरण्य', 'शतरंज के खिलाड़ी' और 'सद्गति'।

सत्यजीत राय को अनेक सम्मान मिले हैं जिनमें उल्लेखनीय हैं– 1976 में पद्मविभूषण और 1978 में ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय और 1985 में कलकत्ता विश्वविद्यालय द्वारा डॉक्टरेट की उपाधि। ब्रिटिश फिल्म संस्थान ने 1978 में "पिछली अर्द्धशताब्दी के सर्वश्रेष्ठ अन्तरराष्ट्रीय फिल्म निर्देशक" के रूप में उनका सम्मान किया।

1965 में उन्हें प्रतियोगिता आधार पर भारत में पहली बार आयोजित अन्तरराष्ट्रीय फिल्म समारोह के निर्णायक मंडल का अध्यक्ष चुना गया। इसके बाद 1974 तथा 1977 में भी उन्होंने इस पद पर काम किया।

सर्वोत्तम कथाचित्र पुरस्कार

दामुल

निर्माता प्रकाश झा को स्वर्ण कमल और 50,000 रुपये का नकद पुरस्कार
निर्देशक प्रकाश झा को स्वर्ण कमल और 25,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति 1984 का सर्वोत्तम कथाचित्र पुरस्कार हिन्दी फिल्म दामुल को "एक सशक्त, यथार्थ और मार्मिक कथाचित्र के रूप में, उस अन्याय से जो सम-सामाजिक समाज में बड़ी तेजी से घर करता जा रहा है, से जूझने और उसका पर्दाफाश करने" के लिए दिया गया है।

भारतीय फिल्म और टेलीविजन संस्थान से स्नातक, प्रकाश झा ने लगभग एक दर्जन वृत्तचित्र और प्रेरणाप्रद फिल्में बनाई हैं। उनकी पहली फीचर फिल्म "हिप हिप हुर्रे" थी। 1982 में बनाई गई 'फेसेस आफटर स्टॉर्म' ने सर्वश्रेष्ठ राष्ट्रीय सूचना फिल्म का तथा नवें भारतीय अन्तरराष्ट्रीय फिल्म समारोह में जूरी का विशेष पुरस्कार भी जीता। 'दामुल' उनकी दूसरी फिल्म है।

निर्देशक की सर्वश्रेष्ठ प्रथम फिल्म के लिए इन्दिरा गांधी पुरस्कार

मीनडुम ओरू काधल कथई

निर्माता राधिका पोथन को स्वर्ण कमल और 25,000 रुपये का नकद पुरस्कार
निर्देशक प्रताप पोथन को स्वर्ण कमल और 25,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

किसी निर्देशक की सर्वश्रेष्ठ प्रथम फिल्म के लिए 1984 का इन्दिरा गांधी पुरस्कार तमिल फिल्म मीनडुम ओरू काधल कथई को "मानसिक रूप से बाधित दो व्यक्तियों की मनोदशा जांच करने और समाज से सहानुभूति की उनकी आवश्यकता पर प्रकाश डालने के स्वागत योग्य प्रयास" के लिए दिया गया है।

प्रताप के० पोथन ने अपने अभिनय जीवन की शुरूआत डॉ० भारथन की मलयालम फिल्म 'आरावम' से की। बालू महेन्द्र ने प्रताप को अपनी फिल्म "अजीयाथा कोलंगल" के माध्यम से तमिल सिनेमा में अवतरित किया। तीन वर्षों की अल्पावधि में ही इन्होंने 25 से अधिक फिल्मों में अभिनय किया है। निर्देशक के रूप में 'मीनडुम ओरू काधल कथई' इनकी प्रथम फिल्म है।

राधिका पोथन को निर्देशक भारती राजा ने अपनी फिल्म 'किड़क्कि पोगुम रेल' से फिल्मों में उतारा। तब से लेकर अब तक वे 80 से अधिक फिल्मों में अभिनय कर चुकी हैं। निर्माता के रूप में यह इनकी प्रथम फिल्म है।

सर्वाधिक लोकप्रिय एवं पूर्ण मनोरंजन देने वाली सौंदर्यबोधक व सामाजिक-महत्व की फिल्म

कोनी

निर्माता पश्चिम बंगाल सरकार को स्वर्ण कमल और 50,000 रुपये का नकद पुरस्कार
निर्देशक सरोज डे को स्वर्ण कमल और 25,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

1984 की सर्वाधिक लोकप्रिय एवं पूर्ण मनोरंजन देने वाली सौंदर्यबोधक व सामाजिक-महत्व की बंगला फिल्म कोनी को "एक निर्धन तरूणी और उसके प्रशिक्षक के संघर्ष को सुरूचिपूर्ण ढंग से और आदर्श खिलाड़ी की भावना को जागृत करने" के लिए दिया गया है।

निपुण फिल्म निर्माता सरोज डे 1955 से फिल्म निर्देशन कर रहे हैं। उनकी फिल्म "डाक हरकारा" 1958 के वैनिस फिल्म समारोह में दिखाई गई थी। साथ ही इसने सर्वश्रेष्ठ प्रादेशिक भाषा की फिल्म होने का गौरव भी प्राप्त किया था। एक अन्य फिल्म "निशीथे" ने 1962 में राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त किया। इनकी अन्य महत्त्वपूर्ण फिल्मों में 'बिलोंबितलोय', 'सागरिका', 'शिल्पी', 'हैडमास्टर', 'कान्ना', 'शंख बेला', 'जेजे दरिया' और 'स्वाति' शामिल हैं।

राष्ट्रीय एकता पर सर्वोत्तम कथाचित्र के लिए नरगिस दत्त पुरस्कार

आदमी और औरत

निर्माता महानिदेशक, दूरदर्शन को रजत कमल और 30,000 रुपये का नकद पुरस्कार
निर्देशक तपन सिन्हा को रजत कमल और 15,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

1984 का राष्ट्रीय एकता पर सर्वोत्तम कथाचित्र के लिए नरगिस दत्त पुरस्कार हिन्दी फिल्म आदमी और औरत को "विभिन्न सम्प्रदायों और समुदायों में मैत्री और प्रेम बनाए रखने की आवश्यकता पर बल देते समय सहज दृष्टिकोण बनाए रखने" के लिए दिया गया है।

प्रसिद्ध फिल्म निर्माता तपन सिन्हा ने 1946 में अपना कैरियर साउंड रिकार्डिस्ट के रूप में न्यू थिएटर्स में शुरू किया था। कुछ समय तक पाईनवुड स्टूडियो, लंदन में काम करने के बाद वे भारत आकर फिल्म निर्देशन करने लगे। उन्होंने अपनी कई फिल्मों की पटकथा लिखी और बाद की अपनी फिल्मों में संगीत भी दिया। उनकी फिल्मों में 'काबुलीवाला', 'खुदितपाशान', 'निर्जन सैकते', 'आरोही', 'अतिथि', 'सगीना महतो', 'हारमोनियम', 'सफेद हाथी', 'सबुज दीपेर राजा', 'अदालत ओ एकटी मेये' प्रमुख हैं।

परिवार कल्याण पर सर्वोत्तम कथाचित्र पुरस्कार

मोहन जोशी हाज़िर हो

निर्माता सईद अख्तर मिर्ज़ा को रजत कमल और 30,000 रुपये का नकद पुरस्कार
निर्देशक सईद अख्तर मिर्ज़ा को रजत कमल और 15,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

परिवार कल्याण पर सर्वोत्तम कथाचित्र का 1984 का पुरस्कार हिन्दी फिल्म मोहन जोशी हाज़िर हो को "अनुचित सामाजिक और न्याय प्रणालियों का, जिनसे सर्वसाधारण व्यक्ति और उसका परिवार त्रस्त है, सफलतापूर्वक पर्दाफाश करने" के लिए दिया गया है।

सईद अख्तर मिर्ज़ा 1976 में फिल्म तथा टेलीविजन संस्थान में निर्देशन का पाठ्यक्रम पूरा करने के बाद चार वृत्तचित्र और तीन कथाचित्र बना चुके हैं। उनकी पहली फीचर फिल्म "अरविन्द देसाई की अजीब दास्तान" 1978 में बर्लिन फिल्म समारोह के यूथ फोरम में प्रदर्शित की गई। उनकी दूसरी फिल्म "अल्बर्ट पिंटो को गुस्सा क्यों आता है" 1981 में कान फिल्म समारोह में डायरेक्टर्स फोर्टनाईट में दिखाई गई। "मोहन जोशी हाज़िर हो" उनकी तीसरी फीचर फिल्म है।

सर्वोत्तम बाल फिल्म पुरस्कार

माई डियर कुट्टीचाथन

निर्माता एम०सी० पुन्नूस को स्वर्ण कमल और 30,000 रुपये का नकद पुरस्कार
निर्देशक जीजो को स्वर्ण कमल और 15,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति सर्वोत्तम बाल फिल्म का 1984 का पुरस्कार मलयालम फिल्म माई डियर कुट्टीचाथन को "थ्री-डी दृश्य-शैली में एक मनोरंजक फैंटसी के सुन्दर प्रस्तुतीकरण" के लिए दिया गया है।

अपनी शिक्षा के बाद एम० सी० पुन्नूस उर्फ़ अप्पाचन ने अलप्पी में केरल के प्रथम फ़िल्म स्टूडियो 'उदय' की स्थापना की। उन्होंने 30 वर्षों तक 80 मलयालम फिल्मों के निर्माण में अपने भाई की सहायता की। उन्होंने 1977 में अपने भाई की मृत्यु के बाद 'नवोदय' का आरम्भ किया। उन्होंने मलयालम में पहली सिनेमास्कोप फिल्म 'थाचोली अम्बू' बनाई। उसके बाद अप्पाचन ने 'मंजिल बिरिजना पुक्कल' का निर्माण किया। अप्पाचन ने भारत की प्रथम थ्री-डी फिल्म, 'माई डियर कुट्टीचाथन' बनाने का गौरव प्राप्त किया, जिसे हिन्दी सहित अन्य भारतीय भाषाओं में भी 'डब' किया गया है।

28 वर्षीय जीजो ने फिल्म निर्देशक का अपना जीवन 'पदायोत्तम' से शुरू किया था जो पूर्ण रूप से स्वदेश में तैयार की गई 70 मि० मी० की फिल्म थी। यह इनकी दूसरी फिल्म है।

मद्य निषेध पर सर्वोत्तम फिल्म पुरस्कार

एक्सीडेन्ट

निर्माता संकेत को रजत कमल और 30,000 रुपये का नकद पुरस्कार
निर्देशक शंकर नाग को रजत कमल और 15,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति मद्य निषेध पर सर्वोत्तम फिल्म का 1984 का पुरस्कार कन्नड़ फिल्म एक्सीडेंट को "भ्रष्टाचार का भंडाफोड़ करने और शराब पीने की लत के दुष्परिणामों, जिनसे विनाश हो सकता है, पर ज़ोर देने के साहसिक विषय" के लिए दिया गया है।

शंकर नाग, एक अभिनेता, निर्देशक और निर्माता के रूप में कार्य कर रहे हैं। इन्होंने 40 से अधिक फिल्मों में अभिनय किया है। इनकी प्रथम फिल्म 'ओंडानोंडु कल्लाडल्ली' थी। वे 'संकेत' के भागीदारों में से एक हैं और इस बैनर से चार फिल्में 'मिनचिना ओआटा', 'जन्म जन्मदा अनुबंध', 'गीता' और 'एक्सीडेंट' का निर्माण कर चुके हैं।

सर्वोत्तम निर्देशन पुरस्कार

अडूर गोपालकृष्णन्

रजत कमल और 20,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति सर्वोत्तम निर्देशन के लिए 1984 का पुरस्कार अडूर गोपालकृष्णन् को मलयालम फिल्म मुखामुखम में "एक कठिन विषय को उसके सभी सूक्ष्म प्रसंगों सहित सफलतापूर्वक निबाहने" के लिए दिया गया है।

अडूर गोपालकृष्णन का जन्म 1941 में कथककली नृत्य को संरक्षण देने वाले परिवार में हुआ। उन्होंने आठ वर्ष की उम्र से ही नाटकों में काम करना शुरू कर दिया। 1960 में स्नातक की शिक्षा प्राप्त करने तक वे बीस से अधिक नाटकों का निर्देशन कर चुके थे, जिनकी आलोचकों ने भूरि-भूरि प्रशंसा की थी। इनमें से आधा दर्जन नाटक उन्होंने खुद लिखे थे। 1962 में अडूर ने फिल्म और टेलीविजन संस्थान में प्रवेश लिया। 1965 में उन्होंने पटकथा लेखन और निर्देशन में डिप्लोमा प्राप्त किया। इसी वर्ष उन्होंने त्रिवेन्द्रम में चित्रलेखा फिल्म सोसायटी का निर्माण करके केरल में फिल्म सोसायटी आंदोलन का सूत्रपात किया। उनकी कई पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं, जिनमें से एक सिनेमा के बारे में है—जिसका नाम है "वर्ल्ड ऑफ सिनेमा"। इस पुस्तक को 1983 में सिनेमा के बारे में श्रेष्ठ पुस्तक का राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। 1983 में ही अडूर को पद्मश्री से विभूषित किया गया।

उनकी पहली फिल्म "स्वयंवरम्" को चार राष्ट्रीय पुरस्कार मिले। ये थे—श्रेष्ठ कथाचित्र, श्रेष्ठ निर्देशन, श्रेष्ठ सिनेमाटोग्राफी और श्रेष्ठ अभिनेत्री पुरस्कार। "कोडायेट्टम" फिल्म को श्रेष्ठ क्षेत्रीय फिल्म और श्रेष्ठ अभिनेता के पुरस्कार दिए गए। "एलिपथायम" को श्रेष्ठ क्षेत्रीय फिल्म और श्रेष्ठ ध्वनि आलेखन के राष्ट्रीय पुरस्कार मिले। इस फिल्म को 1982 में ब्रिटिश फिल्म इंस्टीच्यूट का महत्वपूर्ण पुरस्कार भी प्राप्त हुआ। अडूर ने लघु चित्र भी बनाए हैं जिनमें "गुरूचेंगनूर", "यक्षगान", "दि चोला हेरिटेज" और "कृष्णनट्टम" उल्लेखनीय हैं।

सर्वोत्तम छायांकन पुरस्कार

जहांगीर चौधरी

रजत कमल और 15,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति सर्वोत्तम छायांकन का 1984 का पुरस्कार जहांगीर चौधरी को हिन्दी फिल्म होली में "विषय की भावना को अभिव्यक्त करने वाली शैली विकसित करने और चुनौतियों का सफलतापूर्वक मुकाबला करने" के लिए दिया गया है।

जहांगीर चौधरी भारतीय फिल्म और टेलीविजन संस्थान से डिप्लोमा प्राप्त हैं और इनकी डिप्लोमा फिल्म को ही सर्वश्रेष्ठ प्रायोगिक फिल्म का पुरस्कार प्राप्त हुआ था। इन्होंने 'दुल्हन वही जो पिया मन भाए', 'एक बार कहो', 'शारदा' 'खुदा कसम' और 'दूसरी दुल्हन' आदि जैसी अनेक फिल्मों के लिए कार्य किया है।

सर्वोत्तम पटकथा पुरस्कार

अडूर गोपालकृष्णन्

रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति सर्वोत्तम पटकथा का 1984 का पुरस्कार अडूर गोपालकृष्णन् को मलयालम फिल्म मुखामुखम में "सशक्त और विश्वव्यापी सामाजिक टिप्पणी करते हुए राजनैतिक द्वंदों में उलझी एक विक्षुब्ध आत्मा के गहन प्रस्तुतीकरण" के लिए दिया गया है।

अडूर गोपालकृष्णन का जन्म 1941 में कथककली नृत्य को संरक्षण देने वाले परिवार में हुआ। उन्होंने आठ वर्ष की उम्र से ही नाटकों में काम करना शुरू कर दिया। 1960 में स्नातक की शिक्षा प्राप्त करने तक वे बीस से अधिक नाटकों का निर्देशन कर चुके थे, जिनकी आलोचकों ने भूरि-भूरि प्रशंसा की थी। इनमें से आधा दर्जन नाटक उन्होंने खुद लिखे थे। 1962 में अडूर ने फिल्म और टेलीविजन संस्थान में प्रवेश लिया। 1965 में उन्होंने पटकथा लेखन और निर्देशन में डिप्लोमा प्राप्त किया। इसी वर्ष उन्होंने त्रिवेन्द्रम में चित्रलेखा फिल्म सोसायटी का निर्माण करके केरल में फिल्म सोसायटी आंदोलन का सूत्रपात किया। उनकी कई पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं, जिनमें से एक सिनेमा के बारे में है—जिसका नाम है "वर्ल्ड ऑफ सिनेमा"। इस पुस्तक को 1983 में सिनेमा के बारे में श्रेष्ठ पुस्तक का राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। 1983 में ही अडूर को पद्मश्री से विभूषित किया गया।

उनकी पहली फिल्म "स्वयंवरम्" को चार राष्ट्रीय पुरस्कार मिले। ये थे—श्रेष्ठ कथाचित्र, श्रेष्ठ निर्देशन, श्रेष्ठ सिनेमाटोग्राफी और श्रेष्ठ अभिनेत्री पुरस्कार। "कोडायेट्टम" फिल्म को श्रेष्ठ क्षेत्रीय फिल्म और श्रेष्ठ अभिनेता के पुरस्कार दिए गए। "एलिपथायम" को श्रेष्ठ क्षेत्रीय फिल्म और श्रेष्ठ ध्वनि आलेखन के राष्ट्रीय पुरस्कार मिले। इस फिल्म को 1982 में ब्रिटिश फिल्म इंस्टीच्यूट का महत्वपूर्ण पुरस्कार भी प्राप्त हुआ। अडूर ने लघु चित्र भी बनाए हैं जिनमें "गुरूचेंगनूर", "यक्षगान", "दि चोला हेरिटेज" और "कृष्णनट्टम" उल्लेखनीय हैं।

सर्वोत्तम अभिनेता पुरस्कार

नसीरूद्दीन शाह

रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति सर्वोत्तम अभिनेता का 1984 का पुरस्कार नसीरूद्दीन शाह को हिन्दी फिल्म पार में "एक पद दलित चरित्र को गहरी समझ के साथ स्वाभाविक रूप से चित्रित करने" के लिए दिया गया है।

भारतीय फिल्म और टेलीविजन संस्थान से प्रशिक्षण प्राप्त नसीरूद्दीन शाह ने अपना फिल्मी जीवन श्याम बेनेगल की 'निशांत' से शुरू किया तथा उसके बाद 'भूमिका', 'मंथन' और 'जुनून' में कार्य किया। 'स्पर्श' में अपनी भूमिका के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार जीतने वाले नसीरूद्दीन शाह ने 'पार' में ही अपनी भूमिका के लिए पिछले वैनिस अंतरराष्ट्रीय फिल्म समारोह में सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का पुरस्कार जीता।

सर्वोत्तम अभिनेत्री पुरस्कार

शबाना आज़मी

रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति सर्वोत्तम अभिनेत्री का 1984 का पुरस्कार शबाना आज़मी को हिन्दी फिल्म पार में ''एक ऐसी महिला, जो अपने शोषित और दलित पति के कष्टों में उसका साथ देती है, की आन्तरिक पीड़ा और क्षणिक प्रसन्नता को अभिव्यक्त करने'' के लिए दिया गया है।

इन्होंने यह पुरस्कार प्राप्त किया था। वे भारतीय फिल्म और टेलीविजन संस्थान से स्नातक हैं।

बहुमुखी प्रतिभा की धनी अभिनेत्री शबाना आज़मी ने 'अंकुर', 'निशांत', 'जुनून', 'मंडी', 'शतरंज के खिलाड़ी', 'मासूम' 'भावना' और 'स्पर्श' आदि जैसी फिल्मों में निरंतर जटिल और असाधारण भूमिकाएं निभाई हैं। वे सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री के लिए चौथी बार यह राष्ट्रीय पुरस्कार जीत रही हैं। इससे पूर्व 'अंकुर', 'अर्थ' और 'खण्डहर' में

सर्वोत्तम सह अभिनेता पुरस्कार

विक्टर बनर्जी

रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति सर्वोत्तम सह अभिनेता का 1984 का पुरस्कार विक्टर बनर्जी को बंगला फिल्म घरे बाइरे में "एक ईमानदार और प्रगतिशील व्यक्ति की आत्मा के भीतर द्वंद की जटिल तहों की यथार्थ अभिव्यक्ति" के लिए दिया गया है।

अनुभवी रंगमंच कलाकार विक्टर बनर्जी कई वर्षों से फिल्म उद्योग से जुड़े हुए हैं। वे बंगला, अंग्रेजी, हिन्दी और उर्दू की अनेक फिल्मों में काम कर चुके हैं। वे एक अंग्रेजी फिल्म 'एन आगस्ट रेक्विएम' के लेखक, निर्माता और निर्देशक भी हैं।

सर्वोत्तम सह अभिनेत्री पुरस्कार

रोहिणी हट्टंगड़ी

रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति सर्वोत्तम सह अभिनेत्री का 1984 का पुरस्कार रोहिणी हट्टंगड़ी को हिन्दी फिल्म पार्टी में "एक अतृप्त कलाकार की आन्तरिक भावनाओं को समझने और संवेदनापूर्वक अभिव्यक्त करने" के लिए दिया गया है।

रोहिणी हट्टंगड़ी विख्यात रंगमंच अभिनेत्री हैं। उन्होंने राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय और एशियन थिएटर इंस्टीच्यूट से प्रशिक्षण प्राप्त किया है। उन्होंने सबसे पहले सईद मिर्ज़ा की फिल्म "अरविन्द देसाई की अजीब दास्तान" और "अल्बर्ट पिन्टो को गुस्सा क्यों आता है" में काम किया। वे रवीन्द्र धर्मराज की "चक्र" और महेश भट्ट की "अर्थ" फिल्मों में भी काम कर चुकी हैं। रोहिणी को रिचर्ड ऐटनबरो की फिल्म "गांधी" में कस्तूरबा गांधी की भूमिका के लिए श्रेष्ठ सह अभिनेत्री का ब्रिटिश एकैडमी पुरस्कार मिला।

सर्वोत्तम बाल कलाकार पुरस्कार

मास्टर अरविन्द, मास्टर सुरेश, मास्टर मुकेश और बेबी सोनिया

रजत कमल और 5,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति सर्वोत्तम बाल कलाकार का 1984 का पुरस्कार संयुक्त रूप से मास्टर अरविन्द, मास्टर सुरेश, मास्टर मुकेश और बेबी सोनिया को मलयालम फिल्म माई डियर कुट्टीचाथन में "अत्यंत सहज, मोहक और स्वच्छंद सामूहिक भूमिका" के लिए दिया गया है।

मास्टर अरविंद को 1980 में 'ओपोल' फिल्म में श्रेष्ठ बाल कलाकार का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। यह उनकी दूसरी फिल्म है।

बारह वर्षीय सुरेश को कई पुरस्कार मिले हैं। उन्हें पिछले वर्ष श्रेष्ठ बाल कलाकार का राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुआ।

मुकेश ने भी अनेक फिल्मों में काम किया है। उन्हें पहली बार राष्ट्रीय पुरस्कार मिला है।

दस वर्षीया सोनिया मलयालम, तमिल और तेलुगू फिल्मों में कई बाल भूमिकाएं कर चुकी हैं।

सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन पुरस्कार

पी० देवदास

रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन का 1984 का पुरस्कार पी० देवदास को मलयालम फिल्म मुखामुखम में "आवश्यक प्रभाव पैदा करने और संतुलित ध्वनि संयोजन के लिए प्राकृतिक स्वरों को सम्मिलित रूप में सूक्ष्म ढंग से प्रस्तुत करने" के लिए दिया गया है।

पी० देवदास ने भारतीय फिल्म तथा टेलीविजन संस्थान से डिप्लोमा प्राप्त किया। इससे पहले उन्हें अडूर गोपालकृष्णन की फिल्म 'एलिपथायमु' में श्रेष्ठ ध्वनि आलेखन का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। जिन फिल्मों में उन्होंने ध्वनि आलेखन किया है उनमें 'थम्प', 'एस्थपन्न', 'एलिपथायमु' और 'पोक्कुवेईल' प्रमुख हैं।

सर्वोत्तम सम्पादन पुरस्कार

अनिल मलनाड

रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति सर्वोत्तम संपादन का 1984 का पुरस्कार अनिल मलनाड को तेलुगू फिल्म सितारा में ''लय उत्पन्न करके फिल्म की अभिव्यक्ति को तीव्र करने'' के लिए दिया गया है।

अनिल मलनाड की सम्पादक के रूप में पहली फिल्म थी कन्नड़ में बनी 'अरिवु'। उन्होंने बापू की फिल्म 'वंशवृक्षम' में काम करके तेलुगू फिल्म-जगत् में प्रवेश किया। अनिल मलनाड की कुछ श्रेष्ठ फिल्में हैं 'त्यागय्या', 'मंचू पल्लकी' और 'मंथरीगारी वियुयनकुडु'।

सर्वोत्तम कला निर्देशन पुरस्कार

नचिकेत और जयू पटवर्धन

रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति सर्वोत्तम कला निर्देशन का 1984 का पुरस्कार नचिकेत और जयू पटवर्धन को हिन्दी फिल्म उत्सव में "बीते हुए युग को कल्पनापूर्ण ढंग से विस्तृत रूप में फिर से प्रस्तुत करने" के लिए दिया गया है।

नचिकेत और जयू पटवर्धन 1971 में एम० एस० विश्वविद्यालय, बड़ौदा से वास्तुकला की डिग्री लेने के बाद पुणे में इकट्ठे काम कर रहे हैं। वास्तुकला के साथ-साथ वे फिल्म निर्माण से भी जुड़े हुए हैं। इन्होंने 1977 में "घासीराम कोतवाल" के कला निर्देशक और वेशभूषाकार के रूप में फिल्म उद्योग में प्रवेश किया और अब तक दो फिल्मों, "22 जून 1897" और "अनन्त यात्रा" का निर्माण भी कर चुके हैं। इन दोनों फिल्मों में इन्होंने कला निर्देशन भी किया। इन्होंने सईद मिर्ज़ा की फिल्म "मोहन जोशी हाज़िर हो" के लिए भी कला निर्देशन किया। जयू पटवर्धन को "22 जून 1897" फिल्म के लिए यही पुरस्कार मिला था। ये फिल्म 27वें राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कारों में राष्ट्रीय एकता पर बनी श्रेष्ठ फिल्म घोषित की गई थी।

सर्वोत्तम संगीत निर्देशन पुरस्कार

जयदेव

रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति सर्वोत्तम संगीत निर्देशन का 1984 का पुरस्कार जयदेव को हिन्दी फिल्म अनकही में "परम्परागत् संगीत की समकालीन मार्मिक स्थितियों को उभारने में सृजनात्मक उपयोग" के लिए दिया गया है।

इससे पहले उन्हें "रेशमा और शेरा" तथा "गमन" फिल्मों के लिए श्रेष्ठ संगीत निर्देशन का राष्ट्रीय पुरस्कार मिल चुका है।

वयोवृद्ध और अनुभवी संगीत निर्देशक जयदेव ने शास्त्रीय संगीत की शिक्षा अनेक जाने-माने संगीतकारों के चरणों में बैठकर ली, जिनमें उस्ताद अली अकबर खाँ भी शामिल हैं। उन्होंने एस० डी० बर्मन के सहायक के रूप में काम किया। जयदेव हिन्दी और कन्नड़ की लगभग साठ फिल्मों में संगीत दे चुके हैं। उन्होंने एक भोजपुरी और एक नेपाली फिल्म में भी संगीत दिया।

सर्वोत्तम गीतकार पुरस्कार

वसन्त देव

रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति सर्वोत्तम गीतकार का 1984 का पुरस्कार वसन्त देव को हिन्दी फिल्म सारांश में "काव्यात्मक अभिव्यक्ति के माध्यम से स्थितियों और चरित्रों को गहराई और अर्थ प्रदान करने" के लिए दिया गया है

वसन्त देव साहित्य जगत में जाना-पहचाना नाम है। 1972 में उन्हें एक काव्य-संग्रह के लिए भारत सरकार का पुरस्कार मिला था। उन्होंने "भूमिका" फिल्म के लिए गीत लिखे। "अर्द्धसत्य" और "कमला" के लिए संवाद लिखे तथा "उत्सव" और "आक्रोश" के लिए भी गीत लिखे। वे पार्ले कॉलेज में हिन्दी के प्राध्यापक हैं।

सर्वोत्तम पार्श्व गायक पुरस्कार

पंडित भीमसेन जोशी

रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति सर्वोत्तम पार्श्व गायक का 1984 का पुरस्कार पंडित भीमसेन जोशी को हिन्दी फिल्म अनकही में "परम्परागत संगीत को मधुर तथा कुशल ढंग से प्रस्तुत करने और सम-सामयिक विषय में स्थितियों की भावात्मक चेतना को जागृत करने" के लिए दिया गया है।

भीमसेन जोशी को बचपन में ही संगीत से बहुत लगाव था। जब उनके घर वालों ने उनके संगीत सीखने में बाधा डाली तो वे घर छोड़कर चले गए। उन्होंने ग्वालियर, लखनऊ, जालंधर और रामपुर में अनेक संगीतकारों से इस कला की शिक्षा ली। अंत में उन्होंने किराना घराना के उस्ताद अब्दुल करीम खाँ के शिष्य सवाई गांधर्व रामभाऊ कुण्डगोलकर को अपना गुरू बनाया।

उन्होंने शास्त्रीय संगीत का अपना पहला कार्यक्रम 19 वर्ष की आयु में प्रस्तुत किया। पिछले चालीस वर्षों से संगीत साधना करते हुए उन्होंने अपनी एक विशिष्ठ शैली विकसित कर ली है। ऐसा बहुत कम होता है कि शास्त्रीय संगीतकार संगीत-प्रेमियों और आम व्यक्तियों में एक साथ लोकप्रिय हो। पंडित भीमसेन जोशी को 1972 में मैसूर संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार और 1976 में संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उन्हें इस वर्ष पद्मभूषण से अलकृंत किया गया।

सर्वोत्तम पार्श्व गायिका पुरस्कार

एस. जानकी

रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति सर्वोत्तम पार्श्व गायिका का 1984 का पुरस्कार एस. जानकी को तेलुगू फिल्म सितारा में "अपने मधुर गायन से स्थिति के अनुरूप भावनाओं का संचार करने" के लिए दिया गया है।

एस० जानकी ने पार्श्व गायिका के रूप में 1958 में 'एम० एल० ए०' फिल्म से शुरूआत की। अब तक वे लगभग सभी भारतीय भाषाओं में करीब नौ हजार गाने गा चुकी हैं। उन्हें दो बार राष्ट्रीय पुरस्कार मिल चुका है। 1977 में तमिल के लिए और 1980 में मलयालम गीत गाने के लिए उन्हें पुरस्कार दिया गया। वे आन्ध्रप्रदेश राज्य सरकार की ओर से तीन बार और तमिलनाडु सरकार की ओर से चार बार पुरस्कार पा चुकी हैं। उन्हें केरल सरकार की ओर से श्रेष्ठ पार्श्व गायिका का पुरस्कार दस बार मिल चुका है। 1980 में तमिलनाडु सरकार ने एस० जानकी को कलाईममाणि की उपाधि से सम्मानित किया।

सर्वोत्तम वेशभूषाकार पुरस्कार

हरूदास और बापुलदास

रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति 1984 का सर्वोत्तम वेशभूषाकार पुरस्कार हरूदास और बापुलदास को घरे बाइरे फिल्म में "व्यापक अनुसंधान के बाद स्वदेशी आंदोलन के समय को यथार्थ रूप में फिर से जीवित करने" के लिए दिया गया है।

विशेष निर्णायक मंडल पुरस्कार

गिद्ध

निर्माता-निर्देशक टी.एस.रंगा को रजत कमल और 5,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति 1984 का विशेष निर्णायक मंडल पुरस्कार हिन्दी फिल्म गिद्ध को ''देवदासी प्रथा के शिकंजे से मुक्त होने का संघर्ष करने वाले लोगों की निस्सहायता का गहराई से चित्रण करने'' के लिए दिया गया है।

35 वर्षीय टी० एस० रंगा कर्नाटक में आधुनिक रंगमंच और सिनेमा आंदोलन से सक्रिय रूप से जुड़े हुए हैं। वे श्रेष्ठ अभिनेता, गायक, पटकथा लेखक और निर्देशक हैं। 1978 में कन्नड़ फिल्म ''ग्रहण'' में श्रेष्ठ पटकथा के लिए उन्हें राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। ''गिद्ध'' उनके द्वारा निर्देशित पहली हिन्दी फिल्म है। वे कुछ वृत्तचित्र भी बना चुके हैं।

सर्वोत्तम असमिया फिल्म पुरस्कार

सोन मोइना

निर्माता आर० बी० मेहता, एम० पी० एन० नायर और शिव प्रसाद ठाकुर को रजत कमल और 20,000 रुपये का नकद पुरस्कार
निर्देशक शिव प्रसाद ठाकुर को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम असमिया फिल्म का 1984 का पुरस्कार सोन मोइना को "लोगों को प्रेरणा देने वाली कहानी में बेरोज़गार युवक की निष्ठा को व्यक्त करने के प्रयास" के लिए दिया गया है।

सर्वोत्तम बंगला फिल्म पुरस्कार

घरे बाइरे

निर्माता राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम लि० को रजत कमल और 20,000 रुपये का नकद पुरस्कार
निर्देशक सत्यजीत राय को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति सर्वोत्तम बंगला फिल्म का 1984 का पुरस्कार घरे बाइरे को "चरित्रों की परस्पर प्रतिक्रिया को फिल्म माध्यम से कुशलतापूर्वक चित्रित करने और पृष्ठभूमि के रूप में राजनैतिक स्थिति को सफलतापूर्वक पुनर्जीवित करने" के लिए दिया गया है।

सत्यजीत राय विश्व के उन गिने-चुने फिल्म निर्देशकों में से हैं जो अपने जीवन काल में ही किंवदंतियों के विषय बन गए। कलकत्ता के प्रेज़िडेंसी कॉलेज में पढ़ाई पूरी करने के बाद उन्होंने शांतिनिकेतन में ललित कला का पाठ्यक्रम पूरा किया। इसके बाद उन्होंने एक विज्ञापन एजेंसी में काम किया। लगभग 30 वर्ष की उम्र में उन्होंने अपनी पहली फिल्म "पाथेर पांचाली" का निर्माण किया जिसे 1956 में कान फिल्म समारोह में वर्ष का "सर्वोत्तम आलेख" कहकर सराहा गया। इसके बाद उनकी ख्याति लगातार बढ़ती गई। अब तक वे 32 फिल्में बना चुके हैं, जिनमें पांच वृत्तचित्र और टेलीविजन के लिए दो लघुचित्र हैं। इनमें से लगभग सभी फिल्मों को अनेक राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय पुरस्कार मिले हैं। विश्व भर में फिल्म प्रेमी सत्यजीत राय को मुट्ठीभर महानतम् फिल्म निर्देशकों में से एक मानते हैं।

सर्वोत्तम हिन्दी कथाचित्र पुरस्कार

पार

निर्माता स्वप्न सरकार को रजत कमल और 20,000 रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक गौतम घोष को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति सर्वोत्तम हिन्दी कथाचित्र का 1984 का पुरस्कार हिन्दी फिल्म पार को "हमारे समाज में शोषित और शोषक के बीच संघर्ष की बुनियादी जड़ों को सशक्त ढंग से उद्घाटित करने" के लिए दिया गया है।

गौतम घोष फिल्मों में आने से पहले रंगमंच और फोटो पत्रकारिता से जुड़े रहे। 1972 में उन्होंने वृत्तचित्र बनाना शुरू किया। वे अनेक प्रायोजित फिल्में और विज्ञापन फिल्में भी बना चुके हैं। उन्होंने अपनी पहली फीचर फिल्म तेलुगू में "मा भूमि" 1980 में बनाई। उनकी दूसरी फिल्म, बंगला में "दखल," को 1981 में वर्ष की श्रेष्ठ फीचर फिल्म का पुरस्कार मिला। इस फिल्म को कई अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार भी मिले। उनकी ताज़ा फिल्म हिन्दी में "पार" को 1984 के वैनिस फिल्म समारोह में श्रेष्ठ अभिनेता का पुरस्कार मिला।

सर्वोत्तम कन्नड़ फिल्म पुरस्कार

बंधना

निर्माता रोहिणी पिक्चर्स को रजत कमल और 20,000 रुपये का नकद पुरस्कार
निर्देशक एस.वी. राजेन्द्र सिंह को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति सर्वोत्तम कन्नड़ फिल्म का 1984 का पुरस्कार बंधना को "महिलाओं की मुक्ति का सर्वप्रिय शैली में समर्थन करने" के लिए दिया गया है।

एस० वी० राजेन्द्र सिंह ने अपना फिल्मी जीवन अपने पिता और निर्माता-निर्देशक डी० शंकर सिंह के मार्गदर्शन में शुरू किया। 1971 से वे स्वतंत्र रूप से काम करने लगे। उनके निर्देशन में बनी फिल्म "नगरहोल" को 1974 में राज्य पुरस्कार मिला और 1984 में "अन्था" फिल्म को श्रेष्ठ पटकथा लेखक का कर्नाटक सरकार का राज्य पुरस्कार प्राप्त हुआ। वे दो हिन्दी फिल्मों "मेरी आवाज सुनो" और "शरारा" का भी निर्देशन कर चुके हैं।

सर्वोत्तम मलयालम फिल्म पुरस्कार

मुखामुखम

निर्माता के० रविन्द्रनाथनु नायर को रजत कमल और 20,000 रुपये का नकद पुरस्कार
निर्देशक अडूर गोपालकृष्णन को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति सर्वोत्तम मलयालम फिल्म का 1984 का पुरस्कार मुखामुखम को "विशेष के सामान्यीकरण द्वारा यथार्थ के अतिक्रमण" के लिए दिया गया है।

रवि के नाम से मशहूर के. रवीन्द्रनाथन नायर 1967 में फिल्मों में आए। उनके द्वारा निर्मित लगभग प्रत्येक फिल्म को राष्ट्रीय और राज्य पुरस्कार मिले हैं। "मुखामुखम" रवि द्वारा निर्मित बारहवीं फिल्म है। उनकी अन्य प्रमुख फिल्में हैं– "अन्वेषीच कण्डथिइल्या", "कट्टुकुरंग", "कंचनसीता", "थम्प", "कुम्माट्टी", "एस्थपन्न" "पोक्कुवेईल" और "ऐलिपथायम"। रवि 1981 में राष्ट्रीय फिल्म समारोह के निर्णायक मंडल के सदस्य थे।

अडूर गोपालकृष्णन की पहली फिल्म "स्वयंवरम्" को चार राष्ट्रीय पुरस्कार मिले। ये थे–श्रेष्ठ कथाचित्र, श्रेष्ठ निर्देशन, श्रेष्ठ सिनेमाटोग्राफी और श्रेष्ठ अभिनेत्री पुरस्कार। "कोडायेट्टम" फिल्म को श्रेष्ठ क्षेत्रीय फिल्म और श्रेष्ठ अभिनेता के पुरस्कार दिए गए। "एलिपथयम" को श्रेष्ठ क्षेत्रीय फिल्म और श्रेष्ठ ध्वनि आलेखन के राष्ट्रीय पुरस्कार मिले। इस फिल्म को 1982 में ब्रिटिश फिल्म इंस्टीच्यूट का महत्वपूर्ण पुरस्कार भी प्राप्त हुआ। अडूर ने लघु चित्र भी बनाए हैं।

सर्वोत्तम मराठी फिल्म पुरस्कार

महानन्दा

निर्माता महेश सतोस्कर को रजत कमल और 20,000 रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक स्वर्गीय के० जी० कोरगांवकर को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम मराठी फिल्म का 1984 का पुरस्कार महानन्दा को "एक महान उपन्यास पर आधारित और युगों से चली आ रही देवदासी प्रथा के शिकार लोगों में आशा का संचार करने वाली फिल्म" के लिए दिया गया है।

सर्वोत्तम उड़िया फिल्म पुरस्कार

क्लान्ता अपरान्हा

निर्माता डायनामिक स्टूडियो प्रा० लि० को रजत कमल और 20,000 रुपये का नकद पुरस्कार
निर्देशक मनमोहन महापात्र को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति सर्वोत्तम उड़िया फिल्म का 1984 का पुरस्कार क्लान्ता अपरान्हा को "समकालीन ग्रामीण जीवन को व्यक्त करने के अभिनव प्रयास" के लिए दिया गया है।

मनमोहन महापात्र ने फिल्म और टेलीविजन इंस्टीच्यूट से फिल्म निर्देशन का डिप्लोमा प्राप्त किया। "क्लान्ता अपरान्हा" उनकी तीसरी उड़िया फीचर फिल्म है। उनकी पहली दो उड़िया फिल्में "सीता राति" और "नीरबा झाड़ा" क्षेत्रीय वर्ग में राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त कर चुकी हैं और वे 1983 और 1985 के अन्तरराष्ट्रीय फिल्म समारोहों में भारतीय पैनोरामा वर्ग में प्रदर्शित की जा चुकी हैं। उनके लघु चित्र "कोणार्क–दि सन टैम्पल" को बंबई में फिल्मोत्सव '84 के पैनोरामा वर्ग में प्रदर्शित किया गया।

सर्वोत्तम तमिल फिल्म पुरस्कार

अचामिलै अचामिलै

निर्माता राजम् बालाचन्दर और वी० नटराजन को रजत कमल और 20,000 रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक के० बालाचन्दर को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति सर्वोत्तम तमिल फिल्म का 1984 का पुरस्कार अचामिलै अचामिलै को "भ्रष्ट सामाजिक, राजनैतिक व्यवस्था से जूझने में एक पत्नी के क्षोभ को लोकप्रिय फिल्म शैली में चित्रित करने" के लिए दिया गया है।

राजम बालाचन्दर 1980 से फिल्म निर्माण के क्षेत्र में हैं और वे सभी दक्षिण भारतीय भाषाओं में फिल्में बना रही हैं।

1944 में जन्मे वी० नटराजन फिल्म निर्माण के क्षेत्र में पदार्पण करने से पहले डाक-तार विभाग में नौकरी करते थे। वे "अचामिलै अचामिलै" फिल्म बनाने वाली कंपनी, कवितालय, के गठन के समय से ही उससे जुड़े हुए हैं।

के० बालाचन्दर 1965 में अपनी पहली फिल्म "नीरकुमिड़ी" से ही प्रसिद्ध हो गए और तब से वे योग्य फिल्म निर्देशक के रूप में प्रतिष्ठित हैं। उन्होंने तमिल, तेलुगु, कन्नड़ और हिंदी फिल्में लिखी हैं और उनका निर्देशन किया है। उनकी चार तमिल फिल्में राष्ट्रीय फिल्म समारोहों में श्रेष्ठ क्षेत्रीय फिल्म का पुरस्कार पा चुकी हैं। 1981 में उन्हें अपनी फिल्म "तन्नीर तन्नीर" में श्रेष्ठ पटकथा के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। वे 31 वें राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार के निर्णायक मंडल के अध्यक्ष थे।

सर्वोत्तम तेलुगू फिल्म पुरस्कार

सितारा

निर्माता एडिडा नागेश्वर राव को रजत कमल और 20,000 रुपये का नकद पुरस्कार
निर्देशक वम्सी को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति सर्वोत्तम तेलुगू फिल्म का 1984 का पुरस्कार सितारा को "एक सरल कहानी को प्रेरक और रोचक ढंग से प्रस्तुत करने" के लिए दिया गया है।

एडिडा नागेश्वर राव रंगमंच पर नाम कमाने के बाद फिल्मों में आए। "आत्मा बंधु" उनकी पहली फिल्म थी। अनेक फिल्मों में अभिनय करने के बाद उन्होंने फिल्म निर्माण के क्षेत्र में प्रवेश किया और अपनी पहली फिल्म "सीरी सीरी मुवा" से उन्हें काफी ख्याति मिली। उनकी फिल्म "शंकरभरणम्" की अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर सराहना हुई है। उनकी ताज़ा फिल्म "सागर संगमम्" को भी कई पुरस्कार मिले हैं।

कहानीकार वम्सी ने अपना फिल्मी जीवन के० विश्वनाथ और भारती राजा जैसे प्रमुख निर्देशकों के सहायक के रूप में प्रारम्भ किया। फिल्म निर्माता के रूप में उन्होंने पहली फिल्म "मंचुपल्लकी" 1980 में बनाई। "सितारा" उनकी दूसरी फिल्म है।

संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल भाषाओं के अलावा अन्य भाषा में सर्वोत्तम कथाचित्र पुरस्कार

मणिक रायटोंग

निर्माता रिशान रापसांग को रजत कमल और 20,000 रुपये का नकद पुरस्कार
निर्देशक अर्धेन्दु भट्टाचार्य को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल भाषाओं के अलावा अन्य भाषा में सर्वोत्तम कथाचित्र का 1984 का पुरस्कार खासी फिल्म मणिक रायटोंग को "लोकप्रिय जनजाति किंवदंती को काव्यात्मक तथा लयात्मक शैली में प्रस्तुत करने" के लिए दिया गया है।

खासी क्षेत्र के आदिवासी रिशान रापसांग ने शिलांग पोलीटैक्नीक में सिविल इंजीनियरी का अध्ययन पूरा करने के बाद फीचर फिल्में, विज्ञापन फिल्में और वृत्तचित्र बनाने के लिए अपनी कंपनी 'नियो सिने प्रॉडक्शन' की स्थापना की। उन्होंने मणिक रायटोंग फिल्म का निर्माण किया जो खासी भाषा की प्रथम फीचर फिल्म है। उन्होंने "पूर्वोत्तर क्षेत्र का पशुधन" नामक एक वृत्तचित्र भी तैयार किया है।

अर्धेन्दु भट्टाचार्य की निर्देशक के रूप में पहली फीचर फिल्म 'मणिक रायटोंग' है। इस फिल्म की पटकथा भी उन्होंने लिखी। इसके अलावा उन्होंने "पूर्वोत्तर क्षेत्र का पशुधन" नामक एक वृत्तचित्र का निर्देशन भी किया है। अर्धेन्दु ने विश्वभारती शांतिनिकेतन से शिक्षा प्राप्त की।

सर्वोत्तम ग़ैर कथाचित्र पुरस्कार

म्यूज़िक ऑफ़ सत्यजीत राय

निर्माता राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम लि० को स्वर्ण कमल और 15,000 रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक उत्पलेन्दु चक्रवर्ती को स्वर्ण कमल और 15,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम गैर कथाचित्र का 1984 का पुरस्कार म्यूज़िक ऑफ सत्यजीत राय को "एक महान फिल्म निर्माता के महत्वपूर्ण सृजनात्मक पक्ष को सिनेमा के माध्यम से संवेदना के साथ उजागर करने" के लिए दिया गया है।

उत्पलेन्दु चक्रवर्ती की पहली फीचर फिल्म "मोईना तदान्त" को 1981 में श्रेष्ठ निर्देशन का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। उनकी दूसरी फिल्म "चोख" को 1983 में भारत के नवें अन्तरराष्ट्रीय फिल्म समारोह में विशेष निर्णायक मंडल पुरस्कार मिला। इसके अलावा इस फिल्म को 1982 की श्रेष्ठ फीचर फिल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार भी प्राप्त हुआ।

सर्वोत्तम मानवशास्त्रीय/मानवजातीय फिल्म पुरस्कार

बड़ा मडिया

निर्माता को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक मनोहर एस० वर्पे को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति सर्वोत्तम मानवशास्त्रीय/मानवजातीय फिल्म का 1984 का पुरस्कार बड़ा मडिया को "भारतीय समाज के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण जटिल समस्या के आत्मीय चित्रण" के लिए दिया गया है।

सर्वोत्तम जीवनी संबंधी फिल्म पुरस्कार

पद्मश्री कलामण्डलम् कृष्णन नायर

निर्माता जेम्स पॉल को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार
निर्देशक मैथ्यू पॉल को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम जीवनी संबंधी फिल्म का 1984 का पुरस्कार पद्मश्री कलामण्डलम् कृष्णन नायर को "कथक्कली को पूर्णतया समर्पित एक व्यक्ति के व्यक्तित्व को प्रस्तुत करने के लिए फिल्म माध्यम के सुन्दर उपयोग" के लिए दिया गया है।

जेम्स पॉल फिल्म-निर्यात के व्यवसाय से जुड़े हैं। उनके द्वारा बनाई गई पहली फिल्म "रिवर्ज़ ऑफ केरला" को केरल सरकार से 1983 के श्रेष्ठ वृत्तचित्र का पुरस्कार मिला। ये उनके द्वारा बनाई गई दूसरी फिल्म है।

मैथ्यू पॉल स्नातक स्तर की शिक्षा के बाद नवोदय स्टूडियो में काम करने लगे। उन्होंने "पद्योत्तम" और "माई डियर कुट्टीचाथन" फिल्मों के सह निर्देशक के रूप में काम किया। उनके पहले वृत्तचित्र "रिवर्ज़ ऑफ केरला" को 1983 में श्रेष्ठ वृत्तचित्र का राज्य पुरस्कार मिला। ये उनके द्वारा निर्देशित दूसरा वृत्तचित्र है।

पर्यावरण तथा परिस्थिति विज्ञान सहित सर्वोत्तम वैज्ञानिक फिल्म पुरस्कार

अरण्य आमार

निर्माता पश्चिम बंगाल वन विभाग और पश्चिम बंगाल वन विकास निगम लि० को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक तरूण मजूमदार को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

पर्यावरण तथा परिस्थिति विज्ञान सहित सर्वोत्तम वैज्ञानिक फिल्म का 1984 का पुरस्कार अरण्य आमार को "हमारे अस्तित्व के लिए महत्त्वपूर्ण विषय को लेने और उसे मार्मिक तथा विश्वसनीय ढंग से प्रस्तुत करने" के लिए दिया गया है।

तरूण मजूमदार ने 1954 में सहायक निर्देशक के रूप में फिल्मों में प्रवेश किया और 1959 से वे छद्मनाम यात्रिक से स्वतंत्र रूप से फिल्म निर्देशन करने लगे। 1965 में उन्होंने अपना छद्मनाम छोड़ दिया और अपने असली नाम से निर्देशन करने लगे। उन्होंने हिन्दी और बंगला दोनों भाषाओं में फिल्में बनाई हैं। उनकी कई फिल्मों को राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय पुरस्कार मिले हैं।

सर्वोत्तम औद्योगिक/कृषि फिल्म पुरस्कार

कृषि जन्त्रपति

निर्माता घनश्याम महापात्र को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार
निर्देशक घनश्याम महापात्र को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम औद्योगिक/कृषि फिल्म का 1984 का पुरस्कार कृषि जन्त्रपति को "जिस उद्देश्य के लिए फिल्म बनाई गई है, उसमें सिनेमा माध्यम के इस्तेमाल और उसे कुशलतापूर्वक निबाहने (जो एक उदाहरण बन सकता है)" के लिए दिया गया है।

52 वर्षीय घनश्याम महापात्र पिछले 25 वर्षों से वृत्तचित्रों का निर्माण और निर्देशन कर रहे हैं। उनके पहले कथाचित्र "कनकलता" की काफ़ी सराहना हुई थी।

सर्वोत्तम ऐतिहासिक पुनर्निर्माण/संकलन फिल्म पुरस्कार

नेहरू

निर्माता यश चौधरी को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार
निर्देशक श्याम बेनेगल और यूरी अल्डोखिन को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति सर्वोत्तम ऐतिहासिक पुनर्निर्माण/संकलन फिल्म का 1984 का पुरस्कार नेहरू को "इस शताब्दी की एक कालसृजक विभूति के जीवन को प्रामाणिक रूप से चित्रित करने" के लिए दिया गया है।

यश चौधरी ने फिल्म और टेलीविजन संस्थान से डिप्लोमा प्राप्त करके 1967 में फिल्म्स डिवीजन में निर्देशक के रूप में काम करना शुरू किया। अब तक वे 70 से अधिक फिल्मों का निर्देशन कर चुके हैं। उन्हें अनेक राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय पुरस्कार भी मिले हैं।

श्याम बेनेगल को अपनी पहली फिल्म "अंकुर" से ही काफी ख्याति मिल गई। वे अब तक दस फीचर फिल्म बना चुके हैं। उनकी अन्य फिल्में हैं—"चरणदास चोर", "निशांत", "मंथन", "भूमिका", "कोण्डुरा/अनुग्रहम्", "जुनून", "कलयुग", "आरोहण" और "मंडी"।

यूरी अल्डोखिन "नेहरू" फिल्म के सह निर्देशक हैं। वे मास्को में "सेन्टरानौच" फिल्म कंपनी में निर्देशक के रूप में काम करते हैं। वे वृत्तचित्रों के विशेषज्ञ हैं और कला तथा कलाकारों के बारे में फिल्में बनाने में सिद्धहस्त हैं।

सर्वोत्तम समाज कल्याण/परिवार कल्याण फिल्म पुरस्कार

(1) स्वीकार और (2) गीली मिट्टी

निर्माता जाल मेहता (स्वीकार) को रजत कमल और समाज एवं महिला कल्याण मंत्रालय (गीली मिट्टी) को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक विश्राम रेवांकर (स्वीकार) और संजय काक (गीली मिट्टी) को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम समाज कल्याण/परिवार कल्याण फिल्म का 1984 का पुरस्कार स्वीकार को "कुष्ठ रोग से पीड़ित लोगों के इलाज और उन्हें सामाजिक मान्यता दिलाने की समस्या को विश्वसनीयता के साथ प्रस्तुत करने" के लिए दिया गया है।

सर्वोत्तम समाज कल्याण/परिवार कल्याण फिल्म का 1984 का पुरस्कार गीली मिट्टी को भी "समाज कल्याण के अत्यंत महत्त्वपूर्ण और नाजुक विषय को कल्पनापूर्ण ढंग से प्रस्तुत करने" के लिए दिया गया है।

डॉक्टर जाल मेहता प्लास्टिक सर्जन हैं और पिछले 25 वर्षों से कुष्ठ रोग के इलाज से जुड़े हैं। इस उल्लेखनीय काम के लिए उन्हें पद्मभूषण से अलंकृत किया गया है।

विश्राम रेवांकर पिछले 21 वर्षों से फिल्म और टेलीविजन इंस्टीच्यूट में अध्यापन कर रहे हैं। वे कई वृत्तचित्रों और टेलीविजन कार्यक्रमों का निर्देशन और फीचर फिल्मों का संपादन कर चुके हैं।

संजय काक ने टेलीविजन न्यूज फीचर श्रंखला के लिए एक दर्जन से अधिक लघुचित्र बनाए हैं। "गीली मिट्टी" के अलावा इन्होंने "किन्नौर के लोग" तथा "सावधान! बच्चे खेल रहे हैं" नामक वृत्तचित्र भी बनाए हैं। इन दिनों वे दिल्ली में इंडीपेंडेंट टेलीविजन में सीरीज़ डायरेक्टर के रूप में काम कर रहे हैं।

सर्वोत्तम खोजी/साहसी फिल्म पुरस्कार

एवरेस्ट 84

निर्माता सिनेमा विज़न इंडिया को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार
निर्देशक सिद्धार्थ काक को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति सर्वोत्तम खोजी/साहसी फिल्म का 1984 का पुरस्कार एवरेस्ट 84 को "ऐसे अभियान के उत्साह और रोमांचक चेतना के आकर्षक चित्रण" के लिए दिया गया है।

सिद्धार्थ काक सक्रिय फिल्म निर्माता हैं जिनकी फिल्में अनेक राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय फिल्म समारोहों में दिखाई गई हैं। वे 1983 में राष्ट्रीय फिल्म समारोह में वृत्तचित्रों के लिए निर्णायक मंडल के सदस्य थे। वे राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम की पटकथा सलाहकार समिति के सदस्य हैं।

सर्वोत्तम समाचार चित्र पुरस्कार

दि रिक्शा ड्राईवर्स ऑफ मध्य प्रदेश

निर्माता मध्य प्रदेश माध्यम को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार
छायाकार नरेन कोन्द्रा को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति सर्वोत्तम समाचार चित्र का 1984 का पुरस्कार रिक्शा ड्राईवर्स ऑफ मध्य प्रदेश को "एक सम-सामयिक और समाचारपरक समस्या के साहसिक और संतुलित प्रस्तुतीकरण" के लिए दिया गया है।

सर्वोत्तम कार्टून फिल्म पुरस्कार

नेशनल हाईवे

निर्माता नेशनल इंस्टीच्यूट ऑफ डिजाइन को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक आर० एल० मिस्त्री को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

कार्टूनकार आर० एल० मिस्त्री को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम कार्टून फिल्म का 1984 का पुरस्कार नेशनल हाईवे को "हर समय सामने रहने वाली किसी समस्या को प्रस्तुत करने में आधुनिक प्रतीकों का बढ़िया ढंग से इस्तेमाल करने" के लिए दिया गया है।

विशेष निर्णायक मंडल पुरस्कार

श्री हेमकुन्ट साहिब

निर्माता सूचना एवं जनसम्पर्क निदेशक, पंजाब सरकार को रजत कमल और 5,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

1984 का विशेष निर्णायक मंडल पुरस्कार श्री हेमकुन्ट साहिब को "जाति, धर्म और मत के बंधनों से ऊपर उठकर आस्था के प्रति समर्पण की मानवीय चेतना को संवेदनापूर्वक प्रस्तुत करने" के लिए दिया गया है।

सिनेमा पर सर्वोत्तम पुस्तक के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार

जगन्नाथ चट्टोपाध्याय

चलचित्रेर आविर्भाव पुस्तक के लेखक जगन्नाथ चट्टोपाध्याय को रजत कमल और 5,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति सिनेमा पर सर्वोत्तम पुस्तक का 1984 का राष्ट्रीय पुरस्कार चलचित्रेर आविर्भाव को "सिनेमा के क्रमिक विकास को व्यापक और योजनाबद्ध ढंग से आकर्षक शैली में प्रस्तुत करने" के लिए दिया गया है।

कलकत्ता विश्वविद्यालय के स्नातक, जगन्नाथ चट्टोपाध्याय की सिनेमा और उसके विकास में रुचि स्कूल के दिनों से ही रही। वे फिल्म सोसायटी आंदोलन से सक्रिय रूप से जुड़े हुए हैं तथा फिल्म सोसायटी की पत्रिकाओं में नियमित रूप से अपने लेख भेजते हैं। फिल्म पत्रकारिता के अतिरिक्त इनकी विशेष रुचि सिनेमा के विभिन्न पहलुओं के बारे में शोध कार्य करने तथा इस माध्यम के सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक प्रभाव में है। इस समय वे भारतीय स्टेट बैंक में कार्यरत् हैं।

सर्वोत्तम फिल्म पत्रकार के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार

स्वप्न मल्लिक

रजत कमल और 5,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति सर्वोत्तम फिल्म पत्रकार का 1984 का राष्ट्रीय पुरस्कार स्वप्न मल्लिक को "सिनेमा से संबंधित अनेक विषयों पर इनके लेखन में परिपक्वता और जिम्मेदारी" के लिए दिया गया है।

37 वर्षीय स्वप्न मल्लिक 'स्टेट्समैन' कलकत्ता के सम्पादकीय मंडल में हैं। इस समाचार पत्र में इनका साप्ताहिक कालम भारत में फिल्मी गतिविधियों की व्यापक झांकी प्रस्तुत करता है। वे "फिल्मोत्सव'82" की प्रबंध समिति में भी रहे और उसके लिए "समारोह समाचार" नामक दैनिक पत्रिका का सम्पादन किया तथा 1978, 1983 (पुस्तक पुरस्कार) और 1984 के लिए राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कारों के निर्णायक मंडलों के सदस्य भी रह चुके हैं। वे राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम के क्षेत्रीय पटकथा पैनल में शामिल हैं और भारतीय पैनोरामा की चयन समिति के सदस्य भी रह चुके हैं।

एक्सीडेंट

कन्नड़/125 मिनिट

निर्माता संकेत, **निर्देशक** शंकर नाग, **पटकथा लेखक** वसन्त मोकाशी, **मुख्य अभिनेता** अनंत नाग, **सह अभिनेता** रमेश भट्ट, **सह अभिनेत्री** अरुणधति राव, **छायाकार** शंकर देवधर, **ध्वनि आलेखक** पांडुरंगनु, **सम्पादक** पी. भक्तवत्सलमु, **कला निर्देशक** हेमा असं, **वेशभूषाकार** हेमा असं, **संगीत निर्देशक** इलया राजा।

दीपक और राहुल नशीली दवाईयों के आदी दो मालदार और उपेक्षित बेटे थे। उनसे एक दुर्घटना हो गई थी जिसमें गांव के निरीह लोगों को अपनी जान गंवानी पड़ी।

धर्माधिकारी एक स्थानीय दबंग नेता था जो शहर में होने वाले उपचुनाव को जीतने की जी-तोड़ कोशिश कर रहा था। वह नहीं चाहता था कि इस घटना से उसके राजनैतिक जीवन व महत्त्वाकांक्षाओं पर पानी फिर जाए।

इंस्पैक्टर राव जो जांच अधिकारी थे, उन पर इस मामले से हट जाने का दबाव डाला गया, लेकिन इससे पहले उन्होंने एक ईमानदार पत्रकार, रवि, को इस मामले का पूरा ब्यौरा दे दिया।

रवि ने रमन्ना को पकड़ा जो इस दुर्घटना से अकेला ही बच पाया था। विरोधी राजनैतिक दल, जिसके लिए रवि काम करता था, उसने धर्माधिकारी के गढ़ में दरारें पैदा कर दीं और अंत में जो मुकाबला हुआ उसका प्रभाव आश्चर्यजनक रहा।

अचामिलै अचामिलै

तमिल/160 मिनिट

निर्माता राजमु बालाचन्दर, वी. नटराजन **निर्देशक** के. बालाचन्दर, **पटकथा लेखक** के. बालाचन्दर, **मुख्य अभिनेता** राजेश, **मुख्य अभिनेत्री** सरिता, **सह अभिनेता** डेल्ही गणेश, **सह अभिनेत्री** पवित्रा, **छायाकार** बी.एस. लोकनाथ, **ध्वनि आलेखक** एस.पी. रामानाथनु, **सम्पादक** एन.आर. किट्टू, **कला निर्देशक** मोहनमु, **वेशभूषाकार** एस.के. बालन, **संगीत निर्देशक** वी.एस. नरसिंहम, **गीतकार** वैरामुथु, **पार्श्व गायक** मलेशिया वासुदेवन, **पार्श्व गायिक** वाणी जयराम।

नैतिक गुणवत्ता में गहराई से डूबी हुई एक औरत थेनमोड़ी और उलगनाथन, जो कि आडंबरहीन विशेषताओं से परिपूर्ण युवक था, परस्पर आकर्षित हो गए और शादी करके रहने लगे।

उलगनाथन का अपने लोगों और खासतौर से उसकी जाति के लोगों के ऊपर जबर्दस्त प्रभाव और दबदबे को देखते हुए राजनैतिक पार्टियों में उसको अपने साथ मिलाने के लिए एक होड़–सी लग गई थी। उलगनाथन ने उनकी चालों का विरोध किया। इस बात से थेनमोड़ी काफ़ी खुश थी कि उसका पति राजनीतिज्ञों के चंगुल में नहीं फंसा। लेकिन अंत में जो होना था, वही हुआ और उलगनाथन एक राजनैतिक पार्टी में शामिल हो गया।

राजनैतिक प्रणाली द्वारा उलगनाथन के साथ बर्बरता शुरू हुई। थेनमोड़ी, जो अपने पति के पतन के विरुद्ध थी, उसने ताने देने शुरू किए। वह उससे सवाल करती है कि उसने अपने आदर्शों को धोखा क्यों दिया? उलगनाथन उसे दुनियादारी की बातें बताता है और व्यावहारिक होने की सलाह देता है। परन्तु दोनों में तनाव बढ़ता ही जाता है और अंत में वह उलगनाथन को मार कर उसके पतन को रोक देती है।

आदमी और औरत

हिन्दी/57 मिनिट

निर्माता महानिदेशक, दूरदर्शन, **निर्देशक और पटकथा लेखक** तपन सिन्हा, **मुख्य अभिनेता** अमोल पालेकर, **मुख्य अभिनेत्री** महुआ राय चौधरी, **छायाकार** कमल नायक, **ध्वनि आलेखक** सत्येन चटर्जी, **सम्पादक** सुबोध राय, **कला निर्देशक** कार्तिक बोस, **संगीत निर्देशक** आशीष खार।

गांव की एक बीमार युवती बस पकड़ने के लिए सड़क के किनारे खड़ी है। भीतर और बाहर छत पर भी यात्रियों से लदी-फदी एक बस आकर रुकती है। इंतज़ार में खड़े हुए लोग उसमें चढ़ने की कोशिश करते हैं लेकिन घुस नहीं पाते। वे पैदल ही चल पड़ते हैं।

बदमाश सा लगने वाला बंसी नाम का एक देहाती अपने शिकार की टोह में उन्हें रास्ते में मिलता है। उसे उस लड़की पर दया आ जाती है, जो गर्भवती है। वह लड़की प्रसव के लिए वकीलगंज अस्पताल जा रही है। उसके पति को उसे अस्पताल भेजने के लिए लालाजी से 25/-रुपये उधार लेने पड़े हैं, जिसके बदले में उसे लालाजी के खेत पर 7 दिन तक काम करना पड़ेगा।

जब वे चढ़ाई चढ़ने लगते हैं तो लड़की की सांस फूलने लगती है। जंगल का एक गार्ड उसकी मदद के लिए आता है और बाँस की बल्लियों का स्ट्रेचर जैसा बनाकर वे दोनों लड़की को ले जाते हैं। वे दूर पहाड़ी के नीचे पहुंचते हैं, जहां एक तेज़ धार वाली पहाड़ी नदी बह रही है। यहां आकर जंगल का गार्ड उन्हें छोड़कर वापिस चला जाता है क्योंकि उसे अपने दफ्तर जाना होता है। बंसी एक बार लड़की को देखता है और एक बार तेज़ धार वाली नदी को और फिर पार जाने का निश्चय करता है।

यहां एक पुरुष और एक स्त्री का सारी बाधाओं के खिलाफ एक अद्‌भुत संघर्ष दिखाया गया है। वे नदी पार कर ही लेते हैं और सही समय पर अस्पताल पहुंच जाते हैं।

अगली सुबह उसे पता चलता है कि उस लड़की ने एक पुत्र को जन्म दिया है। वह इस खबर को उसके पति को सुनाना चाहता है। उससे वह पूछता है–"तुम्हारे पति का क्या नाम है?" लड़की जवाब देती है – "अनवर हुसैन"। बंसी दोहराता है "अनवर हुसैन?" और यह समझता है कि वह एक मुसलमान लड़की है। बंसी मुस्कुराता है। जब वह जाने लगता है तो लड़की बोलती है–"ऐ आदमी–मैं खुदा से तुम्हारे लिए दुआएं मांगती हूं।" बंसी खुशी से फूला नहीं समाता है।

अनकही

हिन्दी/130 मिनिट

निर्माता सुचित्रमिशा, **निर्देशक** अमोल पालेकर, **पटकथा लेखक** जयन्त धर्माधिकारी, **मुख्य अभिनेता** अमोल पालेकर, **मुख्य अभिनेत्री** दीप्ति नवल, **सह अभिनेता** अनिल चटर्जी, **सह अभिनेत्री** देविका मुखर्जी, **छायाकार** देबू देवधर, **ध्वनि आलेखक** नरेन्द्र सिंह, **सम्पादक** वमन भौंसले, गुरूदत्त शिराली, **कला निर्देशक** चेल-परेश, **संगीत निर्देशक** जयदेव, **गीतकार** बालकवि बैरागी, **पार्श्व गायक** पं. भीमसेन जोशी, **पार्श्व गायिका** आशा भौंसले।

नन्दू, अपने पिता की ज्योतिष की भविष्यवाणियों पर अगाध विश्वास होने के कारण एक विचित्र स्थिति में फँस जाता है। उसके सारे कार्य, योजनाएं, सुषमा के लिए उसका प्यार, इन्दु के साथ उसका विवाद, ये सब उसी धारणा के परिणाम हैं कि उसके पिता की बात कभी गलत नहीं हो सकती। शीघ्र ही नन्दू को यह अहसास हो जाता है कि मनुष्य की धारणाओं से ऊपर भी कोई ताकत है। ऐसी ताकत जो जानी और अनजानी भविष्यवाणियों को प्रभावित करती है। नन्दू, सुषमा और इन्दु की ज़िन्दगी जैसे-जैसे अनिश्चितताओं से घिरती जाती है, वैसे-वैसे ज्योतिषी जी भगवान से प्रार्थना करते हैं कि उनकी भविष्यवाणियां गलत ही सिद्ध हों।

भाग्य के हाथ अपना काम करते जाते हैं और एक अप्रत्याशित चरम बिन्दु की ओर बढ़ता हुआ घटनाओं का झूला आगे-पीछे झूलता रहता है।

बन्धना

कन्नड़/161 मिनिट

निर्माता रोहिणी पिक्चर्स, **निर्देशक** एस.वी. राजेन्द्र सिह, **पटकथा लेखक** एस.वी. राजेन्द्र सिह, **मुख्य अभिनेता** विष्णु वर्धण, **मुख्य अभिनेत्री** सुहासिनी, **सह अभिनेता** जयजगदेश, **सह अभिनेत्री** रूपा देवी, **छायाकार** डी.वी. राजाराम, **ध्वनि आलेखक** एस.पी. रामानाथन्, **सम्पादक** वी.पी. कृष्णा, **कला निर्देशक** एस. विजयलक्ष्मी सिह, **वेशभूषाकार** एस. विजयलक्ष्मी सिह, **संगीत निर्देशक** एम. रंगा राव, **गीतकार** आर.एन. जयगोपाल, **पार्श्व गायक** एस.पी. बालासुब्रमण्यम्, **पार्श्व गायिका** एस. जानकी.

डॉ० हरीश एक नौजवान प्रसिद्ध सर्जन है जो अपनी विद्यार्थी नंदिनी से प्रेम करने लगता है। वह उससे अपने प्रेम का इजहार करता है और अपने साथ शादी करने के लिए कहता है। लेकिन नंदिनी उसके प्रस्ताव को ठुकरा देती है और कहती है कि वह उसकी दूसरे रूप में पूजा करती है। हरीश अपना मन बदल लेता है और बालू, एक इंजीनियर, से जब वह शादी करती है तो वह उसको आशीर्वाद देता है। बालू को वह बचपन से ही जानती है और प्यार करती है। बालू भी डॉ० हरीश के स्कूल के समय का साथी निकल आता है।

धीरे-धीरे शादी में कड़वाहट आने लगती है। डॉ० हरीश के साथ नंदिनी के संबंधों पर बालू शक करने लगता है और खुल्लम-खुल्ला उससे कहता है कि वह उसके प्रति वफादार नहीं है। इस झगड़े का पता जब हरीश को चलता है तो वह इस मामले को हल करने की पूरी कोशिश करता है। बालू हरीश का विश्वास नहीं करता और गौरी नाम की विधवा के साथ अंतरंग संबंध बढ़ाने लगता है।

नंदिनी गर्भवती है। जब उसे गौरी के साथ बालू के लगाव का पता लगता है वह उसे छोड़कर जाने का फैसला करती है। गुस्से में बालू नन्दिनी को पीट बैठता है और नंदिनी को अस्पताल में भर्ती होना पड़ता है। डॉ० हरीश अपना जीवन बलिदान करके नन्दिनी और उसके बच्चे को बचा लेता है। आखिर में नंदिनी हमेशा-हमेशा के लिए बालू को छोड़ देती है और अपने बच्चे के साथ चली जाती है।

दामुल

हिन्दी/125 मिनिट

निर्माता-निर्देशक, पटकथा लेखक प्रकाश झा, **मुख्य अभिनेता** अन्नू कपूर, **मुख्य अभिनेत्री** श्रीला मजूमदार, **सह अभिनेता** मनोहर सिंह, **सह अभिनेत्री** दीप्ति नवल, **छायाकार** राजन कोठारी, **ध्वनि आलेखक** ए.एम. पद्मानाभन, सुदीप्तो मोहन बासु, **सम्पादक** अपूर्व याग्निक, **कला निर्देशक** गौतम सेन, प्रभात झा, **वेशभूषाकार** प्रभात झा, **संगीत निर्देशक** रघुनाथ सेठ।

"दामुल" में एक विचित्र देहाती रिवाज-पनाह-दिखाया गया है जो एक सामंती प्रणाली है और बिहार में प्रचलित है। एक मालदार ज़मींदार, गरीब किसानों और भूमिहीन मज़दूरों को छोटे-मोटे अपराधों में जानबूझकर फंसा देता है। जब अपराधियों की खोज में पुलिस आती है तो वह उनको अपने संरक्षण में छिपा लेता है और उनको पनाह की प्रथा के अन्तर्गत संरक्षण प्रदान करता है।

जो गरीब मज़दूर पीढ़ी-दर-पीढ़ी गले तक कर्ज़ में डूबे हुए हैं, उनके पास इसके सिवा कोई चारा नहीं कि वह ज़मींदार के इशारों पर अपराधों के साथ-साथ कोई भी काम करने को मजबूर हों।

इस फिल्म में पनाह की समस्या स्थानीय रूप से दिखाई गई है लेकिन अनेक गांव और समाजों में इसके भिन्न-भिन्न रूप पाए जाते हैं। इस फिल्म में अन्य देहाती समस्याओं को भी छुआ गया है। जैसे जातियों के झगड़े, मजदूरों के विवाद, हरिजनों पर अत्याचार और आतंकवादी सामंती ढांचा-जिसमें फंसा हुआ गरीब किसान निकलने का कोई रास्ता नहीं पाता।

घरे बाइरे

बंगला/140 मिनिट

निर्माता राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम लि., **निर्देशक-पटकथा लेखक** सत्यजीत राय, **मुख्य अभिनेता** सौमित्र चटर्जी, **मुख्य अभिनेत्री** स्वातिलेखा चटर्जी, **सह अभिनेता** विक्टर बनर्जी, **सह अभिनेत्री** गोपा एइच, **छायाकार** सौमेन्दु राय, **सम्पादक** दुलाल दत्त, **कला निर्देशक** अशोक बोस, **संगीत निर्देशक** सत्यजीत राय, **वेशभूषाकार** हरूदास और बापुलदास।

सन् 1905 में भारत के वायसरॉय लॉर्ड कर्ज़न ने बंग-भंग की घोषणा की। इसके विरूद्ध एक राजनैतिक आंदोलन उभरा। आतंकवादी गतिविधियां फैलने लगीं और ब्रिटिश माल का बहिष्कार हुआ। संदीप मुखर्जी, जो इस राजनैतिक आंदोलन का एक नेता है, अपने मित्र निखिल चौधरी की गांव की जमींदारी सुकसायर में अपनी राजनैतिक गतिविधियां फैलाने के लिए आता है। यहां निखिल की पत्नी बिमला से निखिल की मुलाकात होती है और वे एक-दूसरे को चाहने लगते हैं।

निखिल को शीघ्र ही यह पता चल जाता है कि संदीप एक सच्चा देशभक्त होने के बजाय एक ऐसा आदमी है जो सत्ता का लोलुप है। उसे यह भी पता चल जाता है कि उसकी पत्नी संदीप से प्रेम करने लगी है। वह संदीप को अपने यहां से निकाल भी नहीं सकता क्योंकि वह जानता है कि ऐसा करने से बिमला उसके नज़दीक नहीं आएगी। समय बीतने के साथ बिमला को यह अहसास होता है कि उसका आकर्षण एक ऐसे आदमी की ओर है जो केवल अपने ही स्वार्थ में लगा हुआ है। वह संदीप को दुत्कार देती है और अपने पति के पास लौट जाती है।

निखिल, बिमला को माफ़ कर देता है और उसे पुन: स्वीकार कर लेता है। लेकिन शीघ्र ही सांप्रदायिक झगड़े शुरू हो जाते हैं और संदीप अपनी जान बचाकर भाग जाता है। लेकिन निखिल खूंखार भीड़ का सामना करने के लिए रात में चला जाता है।

गिद्ध

हिन्दी/120 मिनिट

निर्माता-निर्देशक, पटकथा लेखक टी.एस. रंगा, **मुख्य अभिनेता** ओम पुरी, **मुख्य अभिनेत्री** स्मिता पाटिल, **सह अभिनेता** नाना पाटेकर, **सह अभिनेत्री** गोपी देसाई, **छायाकार** को हंग चियांग, **ध्वनि आलेखक** पांडुरंगन्, **सम्पादक** अरूणा–विकास, **कला निर्देशक** मीरा लाखिया, **वेशभूषाकार** गोपी देसाई, **संगीत निर्देशक** बी.वी. कारंथ, **गीतकार** वसन्त देव, **पार्श्व गायिका** इलान अरूण।

अन्य लोगों की तरह लक्ष्मी की मां का भी विश्वास है कि उसकी बेटी का विवाह नहीं हो सकता और अगर वह पवित्र शपथ को तोड़ेगी तो देवी येलम्मा उसे दंड देंगी और उसके परिवार को अभिशाप दे देंगी। अंधविश्वासों और पुराने रीति-रिवाजों से जकड़े हुए तथा देवदासी की कुप्रथा से मानसिक और शारीरिक रूप से नष्ट हुए इस समाज में स्थानीय वेश्या हनुमी ही एकमात्र ऐसी महिला है जो कुछ सोच-विचार करने वाली है।

हरिजन बस्ती में जब कोई लड़की जवान होती है तो उसका कौमार्य लूटने वाले गिद्ध इकट्ठे हो जाते हैं। मंदिर के पुरोहित पूजा-पाठ करके लाभ कमाना चाहते हैं तो जमींदार तथा सूदखोर भी अपने हाथ सेंकना चाहते हैं। गांव का जमींदार, देसाई, जिसकी ज़मीन पर भूमिहीन हरिजन काम करते हैं, और पास के गांव का एक व्यापारी, पाटिल, ये दावा करते हैं कि गांव की खिलती हुई कलियों का सबसे पहले कौमार्य भंग करने का अधिकार उनका है।

निराशा के इस वातावरण में बंबई रहकर आई सुन्दरी कभी-कभी मानवीय व्यवहार का परिचय देती है। गांव का अत्यंत आदर्शवादी अध्यापक भी वेश्यावृत्ति को रोकने की चेष्टा करता है। बसया नाम का एक व्यक्ति भी है जो लक्ष्मी को दुख-दर्द से उबारने की कोशिश करता है, हालांकि वह सफल नहीं हो पाता।

फिल्म के अंतिम दृश्य में हनुमी और बसया लक्ष्मी को साथ लेकर सड़क की ओर भागते हैं ताकि लक्ष्मी को बंबई भेजा जा सके। लेकिन लक्ष्मी जैसे ही बस में चढ़ती है उसे बस में बैठा विरूपक्षी दबोच लेता है।

होली

हिन्दी/120 मिनिट

निर्माता प्रदीप उप्पूर, **निर्देशक** केतन मेहता, **पटकथा लेखक** केतन मेहता, **मुख्य अभिनेता** संजीव गांधी, **छायाकार** जहांगीर चौधरी, **ध्वनि आलेखक** ए.एम. पद्मनाभन्, **सम्पादक** सुभाष सहगल, **कला निर्देशक** अर्चना शाह, **वेशभूषाकार** अर्चना शाह, **संगीत निर्देशक** रजत ढोलकिया, **गीतकार** हृदय लाणी।

होली कॉलेज कैंपस में एक दिन के जीवन की कहानी है जिसमें लड़कों का होस्टल एक केन्द्र बिन्दु है। उस दिन संयोग से होली के त्यौहार का दिन है। कॉलेज की छुट्टी नहीं थी और विद्यार्थी मौज-मजे के मूड में हैं। धीरे-धीरे इसमें कॉलेज के प्रिंसीपल की कार्यवाहियों के कारण तनाव पैदा होता है, जो कुछ विद्यार्थियों को कॉलेज से निकाल देता है। विद्यार्थी झगड़े पर उतारू हैं। वे होलिका दहन के रूप में होस्टल का फर्नीचर और दूसरा सामान जलाने के साथ-साथ अपनी पुस्तकें भी जला डालते हैं।

इसी जोश में एक नौजवान लड़के का अपमान किया जाता है और वह आत्म-हत्या कर लेता है। लड़कों पर नियंत्रण करने के लिए पुलिस को बुला लिया जाता है। दूसरे दिन सड़कों पर लोग नाच रहे हैं और रंग खेल रहे हैं। उसी समय गिरफ्तार विद्यार्थियों को ले जाने वाली गाड़ी भीड़ में फंस जाती है। विद्यार्थी गाड़ी के अंदर जंगलों के पीछे से बेबस झांकते हैं और गाड़ी उस भीड़ को चीरती हुई निकल जाती है।

क्लान्ता अपरान्हा

उड़िया/95 मिनिट

निर्माता डायनेमिक स्टूडियोज़ प्रा. लि., **निर्देशक** मनमोहन महापात्र, **पटकथा लेखक** मनमोहन महापात्र, **मुख्य अभिनेता** सच्चिदानंद रथ, **मुख्य अभिनेत्री** कनक पाणिग्रही, **सह अभिनेता** मधुसूदन कार, **सह अभिनेत्री** किशोरी देवी, **बाल कलाकार** सुशील कुमार, **छायाकार** रणजीत राय, **ध्वनि आलेखक** शिवसुन्दर रथ, **सम्पादक** सत्येन्द्र मोहन्ती, **कला निर्देशक** पंचनिधि पटनायक, **वेशभूषाकार** दुखीश्याम पटनायक, **संगीत निर्देशक** शान्तनु महापात्र।

आदिकान्डा नौकरी से रिटायर हो चुके हैं। वे अक्सर एक छोटे से रेलवे स्टेशन पर जाकर स्टेशन मास्टर विनोद बाबू से गपशप करते हैं। उनके बचपन का एक मित्र जुड्डु, जो अपने बेटे से मिलने और डाक्टरी जांच कराने के लिए शहर गया था, उन्हें बताता है कि उसने शहर में नीरु की शादी के बारे में बातचीत चलाई थी।

नीरू, संध्या और वीणा के साथ गांव के स्कूल में अध्यापिका है। संध्या और वीणा गांव में ही एक किराए के मकान में इकट्ठी रहती हैं। तीनों में अच्छी मित्रता है।

अशोक, जो संध्या के गांव का रहने वाला है, कभी-कभी उससे मिलने के लिए यहां आता है। इससे गांव के कुछ लोगों में अशोक और संध्या के संबंधों के बारे में ग़लतफहमी पैदा हो जाती है। स्कूल में एक बैठक होती है जिसमें अधिकारी संध्या को नौकरी छोड़ने को कहते हैं। दबाव में आकर संध्या इस्तीफा देने को तैयार हो जाती है। वह अपने गांव जाने के लिए यह गांव छोड़ देती है क्योंकि उसे उम्मीद है कि उसे अपने गांव में नए बने प्राथमिक विद्यालय में नौकरी मिल जाएगी। नीरू को ये सब सुनकर बहुत दुःख होता है। गांव से जाने से पहले संध्या को पता लगता है कि नीरू की शादी की जो बातचीत चल रही थी, वह टूट गई है। इससे वह भी दुःखी हो उठती है।

फिल्म के अंत में गांव के ज्योतिषी को दिखाया जाता है जो नीरू के लिए शादी के एक और प्रस्ताव की जानकारी देने के लिए आदिकान्डा को खोज रहा है। दादी मां को यह खबर मिलती है तो वह फुसफुसाकर कहती है—"शायद इस बार शादी हो जाए।"

कोनी

बंगला/129 मिनिट

निर्माता पश्चिम बंगाल सरकार, **निर्देशक-पटकथा लेखक** सरोज डे, **मुख्य अभिनेता** सौमित्र चटर्जी, **मुख्य अभिनेत्री** श्रीपर्णा बनर्जी, **सह अभिनेता** सुब्रता सेन, **सह अभिनेत्री** शर्मिष्ठा मुखर्जी, **छायाकार** कमल नायक, **ध्वनि आलेखक** दुर्गादास मित्र, **सम्पादक** रमेश जोशी, **कला निर्देशक** सुभाष सिंघा, **संगीत निर्देशक** चिन्मय चटर्जी, **पार्श्व गायिका** मालवी मुखर्जी।

कोनी, एक भोली-भाली लड़की है जो एक गंदी बस्ती में रहती है। क्षितीश सिन्हा, जो एक तैराकी क्लब में कोच हैं उस लड़की में चैंपियन बनने की काफ़ी संभावनाएं देखते हैं, लेकिन अपनी जिद्दी आदतों के कारण क्षितीश क्लब का नियंत्रण करने वाली ताकतों द्वारा अच्छी नजर से नहीं देखे जाते हैं, इसलिए उन्हें एक दिन क्लब से निकाल दिया जाता है।

क्षितिश सिन्हा, कोनी को अपने संरक्षण में ले लेते हैं और उसे तैरना सिखाते हैं। वह कोनी को "फ़ाईट कोनी, फ़ाईट" कहकर प्रोत्साहन देते हैं और यह प्रेरणा देते हैं कि तुम केवल ताकत से ही जीत सकती हो और पक्के इरादों से संघर्ष करके ही तुम अपने अधिकार ले सकती हो।

दलित कोनी का संपर्क अकेला कोनी का ही नहीं, वह तो विरोधों, सामाजिक अन्यायों व अत्याचारों के विरूद्ध मनुष्य के संघर्ष की कहानी का अनंत दस्तावेज है।

दीन-हीन, भोली-भाली कोनी अपने अधिकार पाने के लिए अन्याय और अमानवीय व्यवहार के प्रति व्यवस्था से लड़ती है। लेकिन यह कहानी सफलता की कहानी नहीं है। यह तो उस शुरूआत की गूंज मात्र है जो दीन-हीन लोगों के लिए अंतिम विजय प्राप्त करने में बाधाओं की कठोर लहरों के विरूद्ध एक अनंत प्रयास है।

महानन्दा

मराठी/120 मिनिट

निर्माता महेश सतोस्कर, **निर्देशक** के.जी. कोरगांवकर, **पटकथा लेखक** जयवन्त दालवी, **मुख्य अभिनेता** विक्रम गोखले, **मुख्य अभिनेत्री** फैयाज़, **सह अभिनेत्री** शशिकला, **सह अभिनेता** मोहन अगाशे, **छायाकार** के.जी. कोरगांवकर, **ध्वनि आलेखक** एम.ए. शफ़ीक, **सम्पादक** केशव नायडू, **कला निर्देशक** अंकुश कदम, **वेशभूषाकार** मीनाक्षी कोरगांवकर, **संगीत निर्देशक** हृदयनाथ मंगेशकर, **गीतकार** शान्ता शेल्के, **पार्श्व गायक** सुरेश वाडकर, **पार्श्व गायिका** लता मंगेशकर।

महानन्दा कल्याणी नाम की देवदासी की बेटी है। इसलिए वह विवाह नहीं कर पाती। इस समुदाय की लड़कियां महाजनों का हर तरीके से मनोरंजन करने और उनकी दया पर जीवित रहने के लिए मजबूर रहती हैं। लेकिन महानन्दा भारी दबाव के बावजूद अपनी मां के चरण-चिन्हों का अनुसरण करने से इन्कार करती है। बाबुल नाथ नाडकर्णी हाल ही में उत्तीर्ण पोस्ट ग्रेजुएट है, जो बंबई के एक कॉलेज में प्रोफेसर के रूप में काम करता है। एक मंदिर में उसकी भेंट कल्याणी से होती है और वह उसके घर जाता है, जहां वह महानंदा को देखता है और वे एक-दूसरे को प्यार करने लगते हैं। वे चुपचाप शादी करके किसी दूर-दराज़ स्थान में बस जाने की योजना बनाते हैं।

बदकिस्मती से गांव के पोस्ट मास्टर को उनकी योजना का पता लग जाता है और वह कल्याणी को बता देता है। बाबुल के चाचा, कल्याणी और कुछ अन्य लोग मिलकर उनकी शादी तुड़वाने की कोशिश करते हैं। कल्याणी इस प्रथा में घोर विश्वास करती है और तहे दिल से सोचती है कि यदि उसकी बेटी विवाह करेगी तो देवता का शाप लगेगा और यह उसकी बेटी के हित में नहीं होगा।

कल्याणी ऐसे हालात पैदा कर देती है कि महानंदा बाबुल से शादी नहीं कर सकती, हालांकि वह उसके बच्चे की मां बनने वाली है। बाबुल कंवारा रहता है और कई सालों बाद उस गांव में आता है। वह मंदिर में जाता है जहां उसे सुंदर किशोरी प्रणाम करती है और अपनी मां से मिलने के लिए उससे अनुरोध करती है। उसके सामने यह सत्य उजागर होता है कि दमयंती, जो महानन्दा की बेटी है, वह वास्तव में उसकी अपनी ही बेटी है। वह महानंदा से अपने साथ जाने के लिए कहता है। लेकिन उसका आत्मसम्मान ऐसा करने से रोकता है क्योंकि वह अब उसके लिए पवित्र और निर्दोष नहीं रही है। वह उससे प्रार्थना करती है कि वह अपनी बेटी को ले जाए और वह उसके इस प्रस्ताव को सहर्ष स्वीकार कर लेता है।

मणिक रायटोंग

खासी/125 मिनिट

निर्माता रिशान रापसांग, **निर्देशक** अर्धेन्दु भट्टाचार्य, **पटकथा लेखक** अर्धेन्दु भट्टाचार्य, **मुख्य अभिनेता** विलियम रिनिजहाह, **मुख्य अभिनेत्री** शेबा डियंगडोह, **सह अभिनेता** बेंजामिन खोंगमन, **सह अभिनेत्री** वेरोनिका नोंगबेट, **छायाकार** बिजय आनन्द सब्बरवाल, **ध्वनि आलेखक** रोबिन सेनगुप्ता, **सम्पादक** प्रशान्त डे, **कला निर्देशक** अशोक बोस, **वेशभूषाकार** अशोक बोस, **संगीत निर्देशक** काजू मात्सूई, **गीतकार** सेनड्रोवेल, **पार्श्व गायक** सेनड्रोवेल सियमुलिह, **पार्श्व गायिका** जुडिथ वाहलांग।

मेघालय की खासी पहाड़ियों के लोगों के बीच यह अविस्मरणीय लोकप्रिय लोककथा है। कथानक एक गरीब ग्रामीण युवक मणिक पर केन्द्रित है, जो कि बांसुरी पर मोहक धुनें बजाता था। इस आत्मिक संगीत से एक ग्रामीण युवती, का लिइंग माकौ, मणिक के प्रति आकर्षित होती है।

इसी बीच स्थानीय मुखिया, सीएम, जवान और सुंदर लिइंग को देखकर उससे शादी कर लेता है और उसे अपने महल में ले जाता है। वह सीएम से झगड़ कर वापस अपने गांव आ जाती है।

उधर गांव में लिएंग मणिक की बांसुरी से फिर आकर्षित होती है। वे दोनों शारीरिक प्यार के आगे समर्पित हो जाते हैं। कुछ समय के बाद लिइंग के एक लड़का पैदा होता है।

सीएम को भी बच्चे के बारे में पता लगता है और वह बच्चे के बाप के बारे में जानना चाहता है लेकिन लिइंग इस रहस्य को नहीं खोलती। बाद में यह पता लग जाता है कि मणिक ही बच्चे का पिता है।

क्षेत्र के नैतिक आचरण को तोड़ने का दोषी स्वयं को मानकर मणिक ग्लानि से भरकर चिता पर जल कर मरना चाहता है। कहानी का एक दुखद अन्त होता है जब लिइंग भी मणिक का चिता पर साथ देती है और दोनों आग की लपटों में समा जाते हैं।

मीनडुम ओरू काधल कथई

तमिल/130 मिनिट

निर्माता राधिका पोथन, **निर्देशक** प्रताप पोथन, **पटकथा लेखक** के. सोमासुन्दरेश्वर, **मुख्य अभिनेता** प्रताप पोथन, **मुख्य अभिनेत्री** राधिका पोथन, **सह अभिनेता** रोनी पटेल, **छायाकार** पी.सी. श्रीराम, **ध्वनि आलेखक** एस.पी. रामानाथनु, **सम्पादक** बी. लेनिन, **वेशभूषाकार** राधिका पोथन, **संगीत निर्देशक** इलया राजा, **गीतकार** गंगई अमरण, **पार्श्व गायक** एस.पी. बालासुब्रमण्यमु, **पार्श्व गायिका** एस. जानकी।

सरसू और गणपति दो मानसिक रूप से अविकसित बच्चे हैं। मानसिक रूप से पिछड़े बच्चों के लिए बने घर में खुशी से वक्त गुज़ार रहे हैं। उनकी उस खुशी में जुजु थाथा नाम का एक बुड्ढा भी शामिल हो जाता है। सरसू अपने मां बाप के घर अपने भाई की सगाई के मौके पर गणपति उर्फ गुप्पी के साथ आती है। वहां, बिना सोचे-समझे गुप्पी के साथ अपनी शादी के लिए अपने मां-बाप को मजबूर करती है। शादी के बाद उन दोनों को जुजु थाथा की देखरेख में दूर-दराज़ के एक गांव में भेजा जाता है।

उन्हें दुनियादारी का बिलकुल ज्ञान नहीं है। वे बच्चों की तरह ही रहते और आपस में झगड़ते हैं। लेकिन उनके शरीर एक-दूसरे के नज़दीक ही रहते हैं। सरसू गर्भवती हो जाती है। जुजु थाथा उन्हें बताता है कि वे शीघ्र ही मां-बाप बनने वाले हैं। आने वाले बच्चे के बारे में सोच-सोच कर सरसू और गुप्पी खुशी के मारे पागल हो जाते हैं। लेकिन भाग्य में कुछ और ही है। गुप्पी को एक पागलखाने में आजीवन कारावास की सज़ा मिलती है क्योंकि उसने उस आदमी की हत्या कर दी जिसने सरसू का शील भंग करने की कोशिश की। बच्चे के जन्म के समय सरसू का देहान्त हो जाता है और गुप्पी यह नहीं समझ पाता कि वह सरसू को दुबारा नहीं देख सकेगा। इसी सोच में वह पगला जाता है और अपना शेष जीवन पागलखाने में गुज़ारने को मजबूर हो जाता है।

मोहन जोशी हाज़िर हो

हिन्दी/125 मिनिट

निर्माता सईद अख्तर मिर्ज़ा, **निर्देशक** सईद अख्तर मिर्ज़ा, **पटकथा लेखक** सईद अख्तर मिर्ज़ा, **मुख्य अभिनेता** भीष्म साहनी, **मुख्य अभिनेत्री** दीना पाठक, **सह अभिनेता** नसीरूद्दीन शाह, **सह अभिनेत्री** दीप्ति नवल, **बाल कलाकार** हरुन मिर्ज़ा, **छायाकार** वीरेन्द्र सैनी, **ध्वनि आलेखक** जगमोहन आनन्द, **सम्पादक** रेणु सलूजा, **कला निर्देशक** नचिकेत, **वेशभूषाकार** जैनिफ़र मिर्ज़ा, **संगीत निर्देशक** वनराज भाटिया, **गीतकार** मदहोश बीलग्रामी, **पार्श्व गायक** शैलेन्द्र सिंह, **पार्श्व गायिका** प्रीति सागर।

मोहन जोशी एक सेवानिवृत्त क्लर्क है और बंबई की एक गंदी चाल में रहता है। वह उस बिल्डिंग की मरम्मत न कराने के झगड़े को लेकर अपने मकान मालिक से मुकदमेबाज़ी में उलझ जाता है।

जिस समय मोहन जोशी कानूनी कार्यवाही शुरू करता है, वह कपटी वकीलों, लालची जजों, षडयंत्रकारी मकान मालिकों और चालाक भवन निर्माताओं, भ्रष्ट गवाहों और खूंखार गुण्डों की दुनिया से परिचित होता है। कानूनी पोल पट्टी, कानूनी लफ्फाजी और कानूनी दांव पेंच की वह दुनिया उसे देखने को मिलती है जिससे एक आम आदमी अपरिचित होता है।

अपने परिवार और दोस्तों के घोर विरोध के बावजूद मोहन जोशी इस दुनिया का सामना करने का फ़ैसला करता है। इस मुकाबले में केवल उसकी पत्नी और एक नौजवान पड़ौसी उसका साथ देते हैं। पूरी फिल्म में न्याय के लिए एक व्यंग्यात्मक त्रासदी की कहानी दर्शायी गई है।

मुखामुखम

मलयालम/101 मिनिट

निर्माता के. रवीन्द्रनाथन् नायर, **निर्देशक** अडूर गोपालकृष्णन्, **पटकथा लेखक** अडूर गोपालकृष्णन्, **मुख्य अभिनेता** पी. गंगाधरन् नायर, **मुख्य अभिनेत्री** कवियूर पोन्नम्मा, **सह अभिनेता** बी. के. नायर, **बाल कलाकार** मास्टर कृष्णकुमार, **छायाकार** एम.सी. रवि वर्मा राजा, **ध्वनि आलेखक** पी. देवदास, **सम्पादक** एम. मणि, **कला निर्देशक** एन. शिवन्, **वेशभूषाकार** एन. शिवन्, **संगीत निर्देशक** एम.वी. श्रीनिवासन्।

श्रीधरन एक निष्ठावान क्रांतिकारी और कम्युनिस्ट पार्टी का एक समर्पित कार्यकर्ता है। एक कस्बे में स्थित एक टाईल फैक्टरी के मज़दूर संघ का नेता भी है। उस फैक्टरी का मालिक मारा जाता है और श्रीधरन पर उसकी हत्या का शक किया जाता है। पुलिस उसकी तलाश करती है, लेकिन वह अपने साथियों के साथ भूमिगत् हो जाता है।

साल गुज़रते गए और श्रीधरन को मरा हुआ मान लिया गया। राजनैतिक वातावरण कुछ अधिक नरम होता देखकर उसके साथी बाहर आ जाते हैं।

जिस पार्टी का श्रीधरन ने इतने निःस्वार्थ भाव से समर्थन किया था और सेवा की थी वह अब अपने आदर्शों और नेतृत्व की दृष्टि से बिखर चुकी थी। उसके सदस्य दो दलों में बंट चुके थे लेकिन श्रीधरन की यादगार ही दोनों को जोड़ने वाली एकमात्र कड़ी रह गई थी।

उनकी प्रार्थनाओं और हार्दिक इच्छाओं के फलस्वरूप एक दिन श्रीधरन अचानक प्रकट हो जाता है और उसके सारे अनुयायी उसको अपना साधन और शक्ति समझकर उसके पास इकट्ठे हो जाते हैं। लेकिन उन्हें उससे घोर निराशा होती है। इस समय उन्हें उसके इस तरह सामने आने की ज़रूरत नहीं थी। उसका आना अब उनके लिए निरर्थक था, फिर भी उसके अतीत पर लोगों की गहरी श्रद्धा थी। इसलिए प्रतिद्वंदी दलों के बीच उसके नाम का इस्तेमाल करने की होड़ लग गई थी।

एक दिन श्रीधरन की लाश मिली जिसकी रहस्यमय ढंग से मार-मार कर हत्या कर दी गई थी। प्रतिद्वंदी कम्युनिस्ट पार्टियों ने इस अवसर का लाभ उठाया और पहले की तरह ही उसको हीरो बना दिया। उसकी लाश को लेकर सड़कों पर जलूस निकाले और एक आदर्श क्रांतिकारी के रूप में उसकी जय-जयकार करने लगे।

माई डियर कुट्टीचाथन

मलयालम/90 मिनिट

निर्माता एम.सी. पुन्नूस, **निर्देशक** जीजो, **पटकथा लेखक** रघुनाथ पालेरी, **सह अभिनेता** कोट्टाराक्कारा श्रीधरन नायर, **बाल कलाकार** मास्टर अरविन्द, मास्टर सुरेश, मास्टर मुकेश, बेबी सोनिया, **छायाकार** अशोक कुमार, **ध्वनि आलेखक** पी. देवदास, **सम्पादक** टी.आर. शेखर, **कला निर्देशक** के. शेखर, **वेशभूषाकार** पीताम्बरन्, **संगीत निर्देशक** इलया राजा, **गीतकार** बीचू थिरूमला, **पार्श्व गायक** के.जे. येसूदास, **पार्श्व गायिका** चित्रा।

यह फिल्म आधुनिक पृष्ठभूमि में बच्चों की एक फैंटसी है। एक रिक्शाचालक तीन बच्चों, लक्ष्मी, विजय और विनोद को कुट्टीचाथन के दुष्कृत्यों के बारे में बताता है। वह उन्हें चाथन का मकान भी दिखाता है जो एक उजाड़ पड़ा बंगला है। ये मकान बहुत बदनाम है और बच्चों के स्कूल के रास्ते पर है।

अब इस भुतहे घर में सचमुच एक जादूगर रहता है जो कुटटीचाथन की आत्मा की सहायता से वहां छिपा ख़ज़ाना निकालने की कोशिश में है। एक दिन जब जादूगर घर में मौजूद नहीं होता, तो बच्चे मकान में चले जाते हैं और अनजाने में आत्मा को, जिसे जादूगर ने कैद कर रखा था, मुक्त कर देते हैं। शुरू में उस निराकार आत्मा की आवाज़ से बच्चे डर जाते हैं, लेकिन धीरे-धीरे वे शान्त हो जाते हैं क्योंकि आत्मा बच्चों को इस बात के लिए धन्यवाद देती है कि उन्होंने उसे मुक्त कर दिया। बच्चों का कहना मानकर वह आत्मा एक लड़के के रूप में सामने आती है। जब जादूगर वापस आता है तो उस भुतहे घर में आत्मा नहीं होती।

चाथन के 'आगमन' से बच्चों के मन में जो भी सपने थे वे वास्तविकता में बदल जाते हैं। फिल्म में कई भावुक क्षण भी हैं जैसे कि कुट्टीचाथन लक्ष्मी के पिता की शराब की आदत छुड़ाने में मदद करता है। लेकिन जादूगर जल्दी ही चाथन को ढूंढ लेता है और उसे पकड़ लेता है। परन्तु अन्त में चाथन अपना रूप भूल जाता है और अगला जन्म ले लेता है।

पार

हिन्दी/ 115 मिनिट

निर्माता स्वप्न सरकार, **निर्देशक** गौतम घोष, **पटकथा लेखक** गौतम घोष, **मुख्य अभिनेता** नसीरूद्दीन शाह, **मुख्य अभिनेत्री** शबाना आज़मी, **सह अभिनेता** मोहन अगाशे, **सह अभिनेत्री** ऊषा गांगुली, **छायाकार** गौतम घोष, **ध्वनि आलेखक** ज्योति चटर्जी, **सम्पादक** प्रशान्त डे, **कला निर्देशक** अशोक बोस, **वेशभूषाकार** नीलांजना घोष, **संगीत निर्देशक** गौतम घोष, **पार्श्व गायक** पार्था सेनगुप्ता, **पार्श्व गायिका** शबाना आज़मी।

नौरंगिया और रमा एक नौजवान हरिजन दंपति, बिहार स्थित अपने गांव से भाग जाते हैं क्योंकि एक हत्या के बाद ऊंची जाति के ज़मींदार के गुंडे उनके गांव पर हमला करते हैं। हमले के दूसरे दिन गांव का मुखिया पुलिस और संवाददाताओं को ऊंची जाति के लोगों द्वारा नीची जाति पर किए गए अत्याचारों और अन्यायों की कहानी बता देता है। सरकार मृतकों आदि को मुआवज़ा दे देती है और इस प्रकार मामला ठंडा कर दिया जाता है।

इसी बीच नौरंगिया और रमा, जो इस भयानक रात के बाद गांव छोड़कर भाग जाते हैं, कलकत्ता के एक उपनगर में पहुंचते हैं। कुछ काम ढूंढ़ने की लंबी और निराशाजनक तलाश से परेशान होकर वे सूअरों को एक चौड़ी नदी के उस पार ले जाने का काम पा जाते हैं। इसके बदले में उन्हें कुछ पैसे देने का वायदा किया जाता है। भूखे-प्यासे दंपति नदी की तेज धार में सूअरों के झुंड के साथ उतरते हैं और नदी को पार करने का एक दुखद ड्रामा राहत और उम्मीद के किनारे पहुंच कर खत्म हो जाता है।

पार्टी

हिन्दी/115 मिनिट

निर्माता राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम लिमिटेड, **निर्देशक** गोविन्द निहलानी, **पटकथा लेखक** महेश एलकुंचवार, **मुख्य अभिनेता** मनोहर सिंह, ओम पुरी, **मुख्य अभिनेत्रियां** रोहिणी हट्टंगड़ी, दीपा साही, **छायाकार** गोविन्द निहलानी, **ध्वनि आलेखक** रघुवीर दाते, **सम्पादक** रेणु सलूजा, **कला निर्देशक** नितीश राय, **संगीत निर्देशक** वनराज भाटिया।

विख्यात नाटककार और उपन्यासकार दिवाकर बर्वे को एक उच्च साहित्यिक पुरस्कार मिला है। कलाओं की संरक्षिका मानी जाने वाली श्रीमती राणे शाम को बर्वे के सम्मान में एक पार्टी दे रही हैं। पार्टी में आमंत्रित लोगों में कवि, लेखक, अभिनेता और कई अन्य विद्वान हैं, जो दिनभर, शाम के इस समारोह में भाग लेने की तैयारियों में लगे रहते हैं।

दिवाकर बर्वे जानता है कि पिछले अनेक वर्षों से उसने कोई नई बात नहीं लिखी। उसने समाज में जीवित रहने की कला सीख ली है। परन्तु इस तरह उसने एक व्यक्ति को नष्ट कर दिया है जो सचमुच उसमें निष्ठा रखती है और उससे प्यार करती है। वह है मोहिनी। जो कभी बहुत सफल अभिनेत्री थी, अपनी बढ़ी हुई उम्र में अब भी बर्वे का प्यार पाने का इंतजार कर रही है। वह शराब में अपनी कुंठाएं डुबोने की चेष्टा करती है।

श्रीमती राणे की इस पार्टी में मौजूद प्रत्येक व्यक्ति अपने-अपने ढंग से संघर्षशील कवि अमृत की प्रतिभा का कायल है। भरत एक युवा उदीयमान कवि है जो बर्वे की तरह सफलता प्राप्त करने तथा अमृत की तरह सत्य के मार्ग पर चलने की आकांक्षाओं में डोल रहा है। रवीन्द्र खूबसूरत नौजवान है और प्रतिष्ठित अभिनेता है। वह मोहिनी को अपने वश में करने का इच्छुक है। वृन्दा युवा वामपंथी बुद्धिजीवी है जो बुर्जुवा समझौतों की निन्दा करती रहती है लेकिन साथ ही संपन्न वर्ग से अपने संबंध जोड़े रखने की इच्छुक है। अमृत का मित्र और युवा पत्रकार अविनाश काले ये खबर लाता है कि जिन लोगों के खिलाफ अमृत लड़ता रहा है, उनसे संघर्ष में वह घायल हो गया है और जेल के अस्पताल में पड़ा है। जैसे ही संध्या रात्रि में बदलती है अमृत की मृत्यु का समाचार मिलता है।

एक-एक करके सभी कारें विदा हो जाती हैं। दिवाकर बर्वे के शयन-कक्ष में मदहोश मोहिनी लेटी हुई है लेकिन बर्वे नींद में भी बेचैनी से हिल-डुल रहा है। अमृत का खून से सना चेहरा धीरे-धीरे अंधेरे से उसकी ओर बढ़ता है।

सारांश

हिन्दी/138 मिनिट

निर्माता ताराचन्द बड़जात्या, **निर्देशक** महेश भट्ट, **पटकथा लेखक** सुजीत सेन, **मुख्य अभिनेता** अनुपम खेर, **मुख्य अभिनेत्री** रोहिणी हट्टंगड़ी, **सह अभिनेत्री** सोनी राज़दान, **छायाकार** अदीप टंडन, **ध्वनि आलेखक** हितेन्द्र घोष, **सम्पादक** डेविड धवन, कला **निर्देशक** एम.एस.एस. शिन्डे, **वेशभूषाकार** अमल अल्लाना, **संगीत निर्देशक** अजीत वर्मन, **गीतकार** वसन्त देव, **पार्श्व गायक** अमित कुमार।

न्यूयार्क में हुई दुर्घटना में अपने इकलौते पुत्र की मृत्यु के बाद एक सेवा-निवृत्त स्कूल टीचर, बी० वी० प्रधान, महसूस करते हैं कि अब उनका जीवन बेकार है और उनकी पत्नी पार्वती धार्मिक कार्यों में लग जाती है। पार्वती की मुलाकात एक गुरूजी से होती है जो उसे आश्वासन देते हैं कि उसके आसपास ही उसके पुत्र का पुनर्जन्म होगा।

सुजाता, एक नौजवान महत्त्वाकांक्षी अभिनेत्री है, जो उनके पास पेइंग गेस्ट के रूप में रहती है। उसका विलास के साथ प्रेम हो जाता है जिससे वह ब्याह रचाना चाहती है। विलास के पिता गजानन चित्रे अपने समय के एक छोटे से नेता हैं जो इस शादी के लिए राज़ी नहीं हैं।

एक दिन पार्वती सुजाता और विलास की बातचीत गुपचुप सुन लेती है और उसे यह पता चलता है कि सुजाता गर्भवती है और विलास उसका गर्भपात कराना चाहता है। इस पर पार्वती को यह भरोसा हो जाता है कि सचमुच यह उसके ही बच्चे का पुनर्जन्म होगा, जैसा कि गुरूजी ने भविष्यवाणी की है। वह अपने पति की मदद से बच्चे को बचाना चाहती है। वे राज़ी होते हैं और भारी दबाव के बावजूद वे सुजाता और विलास को मिला देते हैं और उन्हें घर से भाग जाने की सलाह देते हैं।

पार्वती, जो इस उम्मीद पर ज़िंदा थी कि उसके बच्चे का पुनर्जन्म होगा, एकदम टूट जाती है और प्रधान अपनी पत्नी के अंधविश्वासों को तोड़ने के संघर्ष में जुट जाता है।

सितारा

तेलुगु/135 मिनिट

निर्माता एडिडा नागेश्वर राव, **निर्देशक-पटकथा लेखक** वम्सी, **मुख्य अभिनेता** सुमन, **मुख्य अभिनेत्री** भानुप्रिया, **सह अभिनेता** शरत्बाबू, **छायाकार** एम.वी. रघु, **ध्वनि आलेखक** एस.पी. रामानाथन, **सम्पादक** अनिल मलनाड, **कला निर्देशक** थोटा थरणी, **वेशभूषाकार** के. सूर्य राव, **संगीत निर्देशक** इलया राजा, **गीतकार** वेटुरी सुन्दरारामन, **पार्श्व गायक** एस.पी. बालासुब्रमण्यम, **पार्श्व गायिका** एस. जानकी, एस.पी. शैलजा।

देवदास फोटोग्राफर को ट्रेन में सितारा मिलती है। वह उसे अपने घर जाकर उसे मॉडल बनाने में सहायता करता है। अकस्मात् एक फिल्म निर्देशक उसके चित्रों को देखकर सितारा को अवसर देता है और वह एक लोकप्रिय अभिनेत्री बन जाती है। देवदास, सितारा का भविष्य संवारने में सहायता करता है।

एक दिन सितारा पुराने किले में शूटिंग में भाग लेने से इंकार कर देती है। इस पर निर्माता देवदास को दोषी मानता है। वह सितारा को छोड़कर जाने का निश्चय कर लेता है क्योंकि उसने अपने जीवन की पिछली घटनाओं के बारे में उसे नहीं बताया था। किसी प्रकार सितारा देवदास को विश्वास में लेकर अपने पिछले जीवन और नर्तक राजू के साथ संबंधों के बारे में बताती है।

तिलक जो कि देवदास का मित्र है, सितारा की कहानी को सुनकर पुस्तक के रूप में प्रकाशित कर देता है। सितारा, देवदास पर विश्वासघात का आरोप लगाकर उसे छोड़कर चली जाती है। जाने के बाद सितारा बीमार होकर अस्पताल में भर्ती हो जाती है। यहां पर उसकी अंतरंगता एक अधेड़ डाक्टर से हो जाती है जो कि उसका इलाज कर रहा है। वह उससे शादी करना चाहती है। इसी बीच में राजू, जिसे कि मृत समझ लिया गया था, अचानक आ जाता है और घटना एक भिन्न मोड़ ले लेती है।

सोन मोइना

असमिया/135 मिनिट

निर्माता आर.बी. मेहता, एम.पी.एन. नायर, शिव प्रसाद ठाकुर, **निर्देशक** शिव प्रसाद ठाकुर, **पटकथा लेखक** शिव प्रसाद ठाकुर, **मुख्य अभिनेता** प्रांजल साइकिया, **मुख्य अभिनेत्री** मंजुला बरूआ, **सह अभिनेता** सुरेन माहन्त, **सह अभिनेत्री** पूरबी सरमाह, **बाल कलाकार** समुद्रगुप्त दत्ता, **छायाकार** इन्दु कल्प हज़ारिका, **ध्वनि आलेखक** जतिन सरमाह, **सम्पादक** रास बिहारी सिन्हा, **कला निर्देशक** अजान, **वेशभूषाकार** गरिमा हज़ारिका, **संगीत निर्देशक** बसन्त बोरडोलोई, मणिक बोरा, **गीतकार** बसन्त बोरडोलोई, एली अहमद, हेमन्त दत्ता, **पार्श्व गायक** समर हज़ारिका, अरूण दास, **पार्श्व गायिका** नोमिता भट्टाचार्य, शान्ता सरमाह।

सोन मोइना एक निर्धन मध्यमवर्गीय परिवार में सबसे छोटा लड़का है और वह बेरोज़गार है। सब लोगों का काम कर देने की आदत के कारण वह अपने पड़ोस में बहुत लोकप्रिय है। वह क्रिकेट का अच्छा खिलाड़ी है और क्रिकेट का श्रेष्ठ खिलाड़ी बनकर नाम कमाना चाहता है।

मोइना का पिता अपनी लड़की के विवाह का प्रबंध करता है और अपने कमाऊ बेटों से आर्थिक सहायता देने को कहता है लेकिन वे सभी इंकार कर देते हैं।

मोइना अखबार में एक समाचार पढ़ता है कि एक अमीर व्यक्ति अपनी लड़की के लिए गुर्दे के बदले में बहुत सारा धन देने को तैयार है। मोइना तत्काल अपने डाक्टर के पास जाता है, जो उसे बताता है कि बिना गुर्दे के भी आदमी ज़िन्दा रह सकता है, लेकिन वह जीवन भर कठिन परिश्रम का कोई काम नहीं कर सकता।

अब मोइना के सामने यह दुविधा है कि वह श्रेष्ठ क्रिकेट खिलाड़ी बने या किसी अच्छे काम के लिए अपना गुर्दा दान कर दे। अन्त में वह गुर्दा दान करने का फ़ैसला करता है और धन लेकर अपने पिता की मदद करता है। उसके इस त्याग से परिवार के अन्य लोगों की आंखे खुल जाती हैं और वे भी पिता की सहायता करके परिवार को भावी विनाश से बचा लेते हैं।

उत्सव

हिन्दी/145 मिनिट

निर्माता शशि कपूर, **निर्देशक** गिरीश कर्नाड, **पटकथा लेखक** गिरीश कर्नाड, **मुख्य अभिनेता** शशि कपूर, **मुख्य अभिनेत्री** रेखा, **सह अभिनेता** शेखर सुमन, **सह अभिनेत्री** अनुराधा पटेल, **बाल कलाकार** मास्टर मनमुजुनाथ हेगड़े **छायाकार** अशोक मेहता, **ध्वनि आलेखक** हितेन्द्र घोष, **सम्पादक** भानुदास दिवाकर, **कला निर्देशक, वेशभूषाकार** नचिकेत और जयू पटवर्धन, **संगीत निर्देशक** लक्ष्मीकांत प्यारेलाल, **गीतकार** वसन्त देव, **पार्श्व गायक** सुरेश वाडकर, **पार्श्व गायिका** लता मंगेशकर।

समस्थानक राजा का साला है और वसंतसेना, उज्जैन दरबार की सुंदर और प्रसिद्ध नर्तकी, से प्यार करता है। वह एक बदनाम किस्म का आदमी है और वसंतसेना उससे दूर रहना चाहती है।

एक रात को समस्थानक उसका पीछा करता है तो वह भाग कर चारूदत्त के घर में शरण लेती है। चारूदत्त एक सुन्दर ब्राहमण युवक है, जिसकी पत्नी मायके गई हुई है। एक-दूसरे को देखकर दोनों आकर्षित होते हैं। इसी बीच आर्यक नामक विद्रोही, राजा को गद्दी से उतारने का षडयंत्र करता है और प्रसिद्ध लेखक वात्स्यायन अपने कामसूत्र की रचना कर रहे होते हैं। समस्थानक वसंतसेना को पाने की आखिरी कोशिश करता है। उसे एक बाग में जा पकड़ता है और जब वह भागने की कोशिश करती है तो वह अपना संयम खो बैठता है और उसका गला घोंट देता है। उसे बाग के दूसरे हिस्से में चारूदत्त दिखलाई पड़ता है और वह उस पर वसंतसेना की हत्या का आरोप थोप देता है।

चारूदत्त को गिरफ्तार कर लिया जाता है और उसे मृत्युदंड दिया जाता है। लेकिन ऐन वक्त पर उसकी जान बचाने के लिए वसंतसेना आ जाती है, जिसे एक वैद्य ने बचा लिया है।

इसी बीच राजा को गद्दी से उतार दिया जाता है। अब चारूदत्त के सामने समस्या यह है कि वह अपनी पत्नी और वसंतसेना में से किसका वरण करे?

अरण्य आमार

बंगला/66 मिनिट

निर्माता पश्चिम बंगाल सरकार वन विभाग और पश्चिम बंगाल वन विकास निगम लिमिटेड, **निर्देशक, पटकथा लेखक** तरूण मजूमदार, **छायाकार** शक्ति बनर्जी, **संगीत निर्देशक** हेमन्त मुखर्जी।

इस फिल्म में वन संरक्षण, वर्ष भर वृक्षारोपण कार्यक्रम चलाने, वन्य जीवन, वन कर्मचारियों के प्रशिक्षण, कृषि वानिकी के बारे में किसानों से संपर्क तथा अन्य संबंधित विषयों की समस्याओं का चित्रण किया गया है।

बड़ा मडिया

अंग्रेज़ी/16 मिनिट

निर्माता, निर्देशक मनोहर एस० वर्पे, **पटकथा लेखक** दिलीप जामदार, मनोहर एस० वर्पे।

महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश और आंध्रप्रदेश के सीमावर्ती क्षेत्र में बड़ा मडिया जनजाति के लोग बसे हुए हैं।

फिल्म में इस जनजाति के रहन-सहन, विश्वासों और धंधों का परिचय दिया गया है। इस जनजाति ने अपनी पहचान अब भी बनाई हुई है। समाज में हो रहे परिवर्तन का इस जनजाति पर भी प्रभाव पड़ रहा है लेकिन अपने भविष्य का निर्णय ये जाति स्वयं करेगी।

एवरेस्ट 84

अंग्रेज़ी/60 मिनिट

निर्माता सिनेमा विजन इंडिया, **निर्देशक, पटकथा लेखक** सिद्धार्थ काक, **छायाकार** दीपक हलडानकर , संजीव सेठ, **ध्वनि आलेखक** विनोद गनात्रा, **संगीत निर्देशक** भास्कर चंदावरकर।

इस फिल्म में कर्नल बी० के० खुल्लर के नेतृत्व में माउंट एवरेस्ट के लिए भारत के पहले मिश्रित अभियान का चित्रण किया गया है। अभियान दल का उद्देश्य एक भारतीय महिला को विश्व के सर्वोच्च पर्वत शिखर पर पहुंचाना था। 23 मई को पहली भारतीय महिला, बछेन्द्री पाल संसार की सबसे ऊंची चोटी पर चढ़ने में सफल हुई।

गीली मिट्टी

हिन्दी/21 मिनिट

निर्माता समाज एवं महिला कल्याण मंत्रालय, **निर्देशक** संजय काक, **छायाकार** आर० के० बोस, **संपादक** टी० राजू।

इस देश में 10 करोड़ से अधिक बच्चे हैं लेकिन इनमें अधिक संख्या ऐसे बच्चों की है जो ग़रीबी, आर्थिक पिछड़ापन और खराब वातावरण में रहने को मजबूर हैं। बच्चों की मृत्युदर बहुत अधिक है और ये बच्चे कुपोषण के शिकार हैं। जिन परिस्थितियों में ये बच्चे रहते हैं उनके चहुंमुखी विकास के लिए सरकार ने समन्वित बाल विकास योजना चलाई। इस योजना के अन्तर्गत आंगनबाड़ियों की स्थापना की गई। ये आंगनबाड़ियां स्कूल नहीं हैं, लेकिन यहाँ पर बच्चों को बहुत सी बातें सिखाई जाती हैं। यहाँ पर उनके स्वास्थ्य की देखभाल की जाती है और उन्हें पौष्टिक आहार दिया जाता है।

कृषि जन्त्रपति

उड़िया/13 मिनिट

निर्माता, निर्देशक ,पटकथा लेखक घनश्याम महापात्र, **छायाकार** अशोक, संगीत **निर्देशक** सिकन्दर आलम।

फिल्म में कृषि के बेहतर तरीकों के माध्यम से खेतीबाड़ी के विभिन्न चरणों का चित्रण करने के साथ-साथ यह भी दिखाया गया है कि इनसे किसानों के जीवन में कैसे परिवर्तन आ रहा है। फिल्म में ये भी चित्रित किया गया है कि बायोगैस के इस्तेमाल से किसान परिवारों को क्या-क्या फ़ायदे हो सकते हैं।

म्यूज़िक ऑफ सत्यजीत राय

अंग्रेज़ी/45 मिनिट

निर्माता राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम लिमिटेड, **निर्देशक , पटकथा लेखक** उत्पलेन्दु चक्रवर्ती, **छायाकार** सोमेन्दु राय, **ध्वनि आलेखक** ज्योति चटर्जी, **संपादक** गुल्लू घोष, **संगीत निर्देशक** उत्पलेन्दु चक्रवर्ती, **गीतकार** सत्यजीत राय, रवीन्द्रनाथ टैगोर।

सत्यजीत राय की फिल्मों की तरह उनका संगीत भी पश्चिमी चेतना और भारतीय भाव का अद्भुत संगम है। वे संगीत को फिल्म के अनिवार्य तत्व के रूप में इस्तेमाल करते हैं। अपनी फिल्म "तीन कन्या" से ही उन्होंने अपनी प्रत्येक फिल्म में संगीत को फिल्म के केन्द्रीय भाव को उभारने और फिल्म की अर्थवत्ता को सजीव करने के लिए इस्तेमाल किया। राय की संगीत-प्रतिभा का सर्वश्रेष्ठ प्रस्फुटन उन धुनों में हुआ है जिनकी रचना उन्होंने अपने लिखे गीतों के लिए की।

फिल्म में इनको "घरे बाइरे" फिल्म के लिए रिकॉर्डिंग से पहले घर में और स्टूडियो में संगीत रचना करते हुए दिखाया गया है।

नेशनल हाईवे

केवल संगीत/3 मिनिट

निर्माता नेशनल इंस्टीच्यूट ऑफ डिजाईन, **निर्देशक, कार्टूनकार , संपादक** आर० एल० मिस्त्री, **संगीत निर्देशक** अतुल देसाई।

यह फिल्म राजमार्ग पर रातभर गाड़ी चलाने से संबंधित है। इसमें दो ड्राइवरों के दृष्टिकोण को समानान्तर रूप से प्रस्तुत किया गया है। इनमें से एक शराब पिए हुए है और दूसरा ये जानता है कि शराब पीने के बाद गाड़ी चलाने के क्या परिणाम हो सकते हैं।

नेहरू

अंग्रेज़ी/180 मिनिट

निर्माता यश चौधरी, **निर्देशक** श्याम बेनेगल, यूरी अल्डोखिन, **छायाकार** सुव्रतो मित्रा, **संगीत निर्देशक** वनराज भाटिया।

इस फिल्म में बचपन से लेकर नेहरू जी के पूरे जीवन की विकास यात्रा दर्शाई गई है। इसमें गांधी जी के पक्के शिष्य के रूप में उभरने, राष्ट्रवाद के भाव के पुष्ट होने, विश्व के बारे में व्यापक होते हुए दृष्टिकोण, देश की स्वतंत्रता तथा उपनिवेशवादी एवं साम्राज्यवादी ताकतों के विरुद्ध संघर्ष और स्वतंत्र भारत के पहले प्रधानमंत्री के रूप में आर्थिक और सामाजिक विकास तथा आधुनिकीकरण की नींव डालने की उनकी भूमिका का चित्रण किया गया है। फिल्म में नेहरू जी पर इतिहास के प्रभाव और आधुनिक संसार पर उनकी छाप को भी दर्शाया गया है।

पद्मश्री कलामण्डलम् कृष्णन् नायर

मलयालम/20 मिनिट

निर्माता जेम्स पॉल, **निर्देशक** मैथ्यू पॉल।

कठिन परिश्रम और निष्ठा के बल पर कलामंडलम् कृष्णनु नायर ने अपने तन और मन को कथक्कली कला के अनुरूप ढाल लिया है। उन्हें महाकवि वल्लथोल के सामने अपनी कला का प्रदर्शन करने का सौभाग्य मिला। वल्लथोल ने उन्हें केरल कलामंडलम् में आने का निमंत्रण दिया था। वहां उन्होंने पट्टीकमथोडी कवलप्परा और कुंजुकुरूप जैसे महान कथक्कली गुरूओं से कठिन प्रशिक्षण के बाद कला सीखी। उनकी रचना पूठनावेश ने सभी कथक्कली प्रेमियों को मंत्रमुग्ध कर दिया। कृष्णनु नायर एक आचार्य हैं जो 'नाट्यमंद्र' की आत्मा से परिचित हैं। उनकी रचना परशुरामन वेश भी बहुत विख्यात है। इस प्रकार महान कलाकार अपनी भंगिमाओं और ईशप्रदत्त चेहरे से प्रकृति की समूची आत्मा और चेतना को मंच पर अभिव्यक्त कर सकता है।

श्री हेमकुन्ट साहिब

पंजाबी/15 मिनिट

निर्माता सूचना एवं जनसंपर्क निदेशक, पंजाब सरकार, **निर्देशक, छायाकार** एस० बी० दुर्गा **संपादक** मधु नायक, **संगीत निर्देशक** सुरेन्द्र कोहली।

इसमें 300 श्रद्धालुओं की तीर्थ यात्रा का चित्रण है। ऋषिकेश से विभिन्न तीर्थ स्थानों तक की यह यात्रा श्री हेमकुन्ट साहिब में समाप्त होती है।

स्वीकार

मराठी/32 मिनिट

निर्माता जाल मेहता, **निर्देशक, पटकथा लेखक** विश्राम रेवांकर, **छायाकार** राजभरतु, एन.सी.थाडे, **संगीत निर्देशक** पी.पी. वैद्यनाथनु

कुष्ठ रोग हर वर्ष हजारों घर बर्बाद करता है। यह रोग किसी को भी हो सकता है। इस रोग के बारे में सच्चाई जानकर ही हम रोगियों को उनकी विकलांगता से उबार कर उन्हें सामान्य जीवन जीने लायक बनाने में मदद कर सकते हैं। पुणे ज़िला कुष्ठ रोग समिति कई चलते-फिरते औषधालय और एक अस्पताल चलाती है। डाक्टर बंडोरावाला कुष्ठ रोग अस्पताल में कुष्ठ रोगियों को सामान्य जीवन बिताने में सहायता दी जाती है। यह संस्था लोगों को कुष्ठ रोग के बारे में आवश्यक जानकारी भी देती है ताकि रोगियों की भलाई के लिए आम लोगों के दृष्टिकोण को बदला जा सके।

दि रिक्शा ड्राईवर्स ऑफ़ मध्य प्रदेश

अंग्रेज़ी/25 मिनिट

निर्माता मध्य प्रदेश माध्यम, **निर्देशक** सईद अख्तर मिर्ज़ा, **छायाकार** नरेन कोन्द्रा।

यह एक रिपोर्ट फिल्म है जिसमें यह दिखाया गया है कि मध्य प्रदेश सरकार ने रिक्शाचालकों को अपनी रिक्शाओं का मालिक बनाकर उनकी दशा सुधारने के लिए जो अध्यादेश जारी किया था, उससे क्या-क्या परिवर्तन आया है।